अध्याय 2

मसीह के सुसमाचार का पौलुस का आत्मकथा रूप में बचाव

(भाग 2)

अध्याय 2 में पौलुस ने उस सुसमाचार के लिए जिसने उसने प्रचार किया था, अपना बचाव जारी रखा। 2:1-10 में उसने बताया कि खतने और उद्धार के मामले पर जो कुछ प्रकट किया गया था उसकी पुष्टि करने के लिए यरूशलेम की कलीसिया के मुख्य अगुवों के साथ उसने कैसे मुलाकात की थी। अतिरिक्त प्रमाण के रूप में कि वह सही सुसमाचार का प्रचार कर रहा था, 2:11-21 में इन दो घटनाओं का इस्तेमाल करते हुए वह यरूशलेम की मुलाकात में अपने वहां जाने पर पतरस को डांटने से अंताकिया में ले गया।

यरूशलेम के दिग्गजों से पौलुस की मुलाकात (2:1-10)

[1]चौदह वर्ष के बाद मैं बरनबास के साथ फिर यरूशलेम को गया, और तीतुस को भी साथ ले गया। [2]मेरा जाना ईश्वरीय प्रकाशन के अनुसार हुआ; और जो सुसमाचार मैं अन्यजातियों में प्रचार करता हूं, उसको मैं ने उन्हें बता दिया, पर एकान्त में उनको जो बड़े समझे जाते थें, ताकि ऐसा न हो कि मेरी इस समय की या पिछली दौड़ धूप व्यर्थ ठहरे। [3]परन्तु तीतुस को भी जो मेरे साथ था और जो यूनानी है, खतना कराने के लिये विवश नहीं किया गया। [4]यह उन झूठे भाइयों के कारण हुआ जो चोरी से घुस आए थे, कि उस स्वतंत्रता का जो मसीह यीशु में हमें मिली है, भेद लेकर हमें दास बनाएं। [5]एक घड़ी भर उनके अधीन होना हम ने न माना, इसलिये कि सुसमाचार की सच्चाई तुम में बनी रहे। [6]फिर जो लोग कुछ समझे जाते थे (वे चाहे कैसे भी थे मुझे इस से कुछ काम नहीं; परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता)-उनसे जो कुछ समझे जाते थे, मुझे कुछ भी नहीं प्राप्त हुआ। [7]परन्तु इसके विपरीत जब उन्होंने देखा कि जैसा खतना किए हुए लोगों के लिये सुसमाचार का काम पतरस को सौंपा गया, वैसा ही खतनारहितों के लिए मुझे सुसमाचार सुनाना सौंपा गया। [8](क्योंकि जिसने पतरस से खतना किए हुओं में प्रेरिताई का कार्य बड़े प्रभाव सहित करवाया, उसी ने मुझ से भी अन्यजातियों में प्रभावशाली कार्य करवाया।) [9]और जब उन्होंने उस अनुग्रह को जो मुझे मिला था जान लिया, तो याकूब, और कैफा, और यूहन्ना ने जो कलीसिया के खम्भे समझे जाते थे, मुझ को और बरनबास को संगति का दाहिना हाथ दिया कि हम अन्यजातियों के पास जाएं, और वे खतना किए हुओं के पास; [10]केवल यह कहा कि हम कंगालों की सुधि लें, और इसी काम को करने

का मैं आप भी यत्न कर रहा था।

आयत 1. यहां पर हमारे लिए घटनाओं का सिलसिलेवार कठिन हो जाता है। यह समस्या तब खड़ी होती है जब प्रेरितों के काम में लूका के विवरण को यहां पर दिए पौलुस के कालक्रम से मिलाने का प्रयास किया जाता है। मिलाने के अलग अलग प्रस्ताव दिए गए हैं। याद रखा जाना चाहिए कि दोनों विवरणों को हर पहलू से मिलाना आवश्यक नहीं है, यह अदालत की कार्यवाही नहीं है जिसमें दो गवाहों की गवाही बिल्कुल मेल खाती होनी चाहिए। एक ही घटना को दोबारा से बताने के लिए अलग अलग लेखक (या गवाह) आम तौर पर अलग अलग विवरणों पर ज़ोर देते हैं क्योंकि हर कोई जो उसके मन में होता है उसी उद्देश्य को पूरा करने का इच्छुक होता है।

पौलुस ने लिखा, **चौदह वर्ष के बाद मैं ... फिर यरूशलेम को गया।**[1] "चौदह वर्ष" के गिनने के आरम्भ के समय से जुड़ा पौलुस के कालक्रम में, क्या पौलुस ने दमिश्क में मसीह में अपने मनपरिवर्तन के साथ आरम्भ किया (प्रेरितों 9:1-19क), या फिर उसने यरूशलेम में अपने पहले दौरे से आरम्भ किया जो कि उसके मनपरिवर्तन के तीन साल बाद हुआ था (1:18; प्रेरितों 9:26)? प्रसंग के आधार पर यह लगेगा कि "चौदह वर्ष" उसके पहली बार जाने के हैं (1:18-24)। परन्तु उसके मनपरिवर्तन के बाद "चौदह वर्ष" (1:11-17) नये नियम की घटनाओं के क्रम में अधिक मेल खाते हैं।

एक और सवाल जो प्रेरितों के काम में यरूशलेम में जाने से जुड़ा है वह 2:1 में दिया गया हवाला है। एक विचार यह है कि पौलुस का यह जाना अकाल राहत में सहायता के लिए था (प्रेरितों 11:27-30)। एक और प्रमुख विचार यह है कि इस यात्रा से ही उसके यरूशलेम की सभा में भाग लेना सम्भव हुआ (प्रेरितों 15:1-29)। इस दूसरे वाले विचार के समर्थक यह तर्क देते हैं कि पौलुस ने गलातियों 2 में अकाल राहत के लिए यरूशलेम में जाने के बारे में नहीं बताया क्योंकि उसके लिए धर्मशास्त्रीय उद्देश्यों से यह अनावश्यक था। (और जानकारी के लिए, देखें *अतिरिक्त अध्ययन के लिए: गलातियों 2:1 में यरूशलेम जाना प्रेरितों के काम में किस यात्रा की बात है?,* पृष्ठ 85 और 86।)।

2:1 में बताई गई यात्रा के समय पौलुस के साथ **बरनबास** था। बरनबास एक यहूदी मसीही था जो अन्यजातियों में सुसमाचार प्रचार के लिए पौलुस के सेवा करता था।[2] प्रेरितों 11:30 और 15:2 में पौलुस के यरूशलेम में जाने के समय वह उसके साथ था। यहां पर बरनबास का उल्लेख साउथ गलेशियन थियुरी के पक्ष में तर्क देता है क्योंकि बरनबास गलातिया के दक्षिणी इलाके में कलीसियाएं स्थापित करते हुए पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा पर उसके साथ गया था (प्रेरितों 13; 14)। गलातिया के विश्वासी बरनबास से परिचित होंगे। परन्तु यूहन्ना मरकुस के बारे में अलग विचारों के कारण पौलुस और बरनबास दूसरी यात्रा के आरम्भ में अलग हो गए थे (प्रेरितों 15:36-41)। प्रेरितों के काम में बरनबास के कभी गलातिया के उत्तरी इलाके में काम करने का कोई प्रमाण नहीं मिलता।

यरूशलेम में पौलुस **तीतुस** को भी साथ ले गया। यह व्यक्ति एक अन्यजाति मसीही, सक्रिय मिशनरी और पौलुस का अच्छा दोस्त था।[3] तीतुस के बारे में एक अकथनीय बात यह है कि उसका उल्लेख प्रेरितों के काम में नाम लेकर नहीं किया गया है। अगली आयतों में बताई

गई निजी मुलाकात में हो सकता है कि बरनबास और तीतुस ने पौलुस के "दो गवाहों" का काम किया।[4]

आयत 2. पौलुस ने जब यह कहा कि उसका यरूशलेम में **जाना ईश्वरीय प्रकाशन के अनुसार हुआ** तो उसने यह स्पष्ट नहीं किया कि उसको कैसा "प्रकाशन" [*apokalupsis,* अपोकलुप्सिस] मिला था। कई संभावनाएं पाई जाती हैं: (1) उसे परमेश्वर की ओर से सीधे एक दर्शन मिला था, जैसा कि प्रेरिताई के अपने पूरे काम के दौरान उसे कई अवसरों पर मिलता था (प्रेरितों 9:3-7; 16:9; 18:9, 10; 23:11)। (2) यह प्रकाशन पवित्र आत्मा के द्वारा किसी और तरीके से मिला था (प्रेरितों 13:1, 2; 16:6, 7; 20:22, 23; 21:4)। (3) एक स्वर्गदूत ने उससे बात की (प्रेरितों 27:23, 24)। (4) अगबुस जैसे किसी नबी ने पौलुस को इसे दिया (प्रेरितों 11:27, 28; 21:10, 11)। कहने का मतलब यह है कि पौलुस यरूशलेम में इस बार इसलिए गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे बुलाया था, न कि इसलिए कि वहां की कलीसिया के अगुओं ने उसे बुलाया था।

यरूशलेम में रहने के समय पौलुस ने **जो सुसमाचार** वह **अन्यजातियों में प्रचार करता** था, **उन्हें बता दिया**। यह वही एक सुसमाचार था जिसका प्रचार उसने अपने मनपरिवर्तन के बाद से किया था, यानी वही जो गलातिया के मसीही लोगों को मिला था (1:6-9)। इस संदेश का सार यीशु मसीह की मृत्यु, गाड़ा जाना और जी उठना था (1:1, 4; 3:1; 1 कुरिन्थियों 15:3, 4)। वह कम से कम चौदह साल तक इस्राएल के बाहर इस सुसमाचार का प्रचार करता रहा था (2:1)।

पौलुस ने यह सुसमाचार जिसका प्रचार उसने **एकांत में उनको जो बड़े समझे जाते थे** किया था, सौंप दिया। कुछ लोग इस विवरण का इस्तेमाल इस यात्रा के पौलुस और बरनबास के अकाल राहत के लिए यरूशलेम में जाने के साथ मिलाने के प्रमाण के रूप में करते हैं (प्रेरितों 11:29, 30), क्योंकि यरूशलेम की सभा के लिए जाना अपने आप में सार्वजनिक था (प्रेरितों 15:1-29)। बेशक यह सम्भव है कि सार्वजनिक मुलाकात से पहले निजी चर्चा हुई हो जिसका वर्णन प्रेरितों 15 में लूका के विवरण में मिलता है।

"जो बड़े समझे जाते थे" यरूशलेम की कलीसिया के अगुओं को कहा गया है, जिनका विशेषकर पौलुस के विरोधियों द्वारा बड़ा सम्मान किया जाता था (2:6, 9 पर टिप्पणियां देखें)। यूनानी शब्द *hoi dokountes* (होई डोकोंटस)[5] जोसेफस के लेख में उनकी पहचान के रूप में मिलता है जो किसी समुदाय में बड़े प्रतिष्ठित लोग थे।[6] जे. बी. लाइटफुट का मानना था कि 2 कुरिन्थियों 11:5 और 12:11 में "बड़े से बड़े प्रेरितों" (या "सुपर-प्रेरितों"; NIV) की बात करने के समय पौलुस इस शब्द का इस्तेमाल व्यंग्यात्मक रूप में कर रहा था।[7] यदि किसी व्यंग्य का इस्तेमाल किया गया है तो यह यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के ढंग को डांटने के लिए था जिससे उन्होंने इन लोगों को ऊंचा किया; भाषा निश्चित रूप में इन लोगों को व्यक्तिगत रूप में कम बताने के इरादे से नहीं थी।

पौलुस ने उस सुसमाचार को जो उसने इन लोगों को सुनाया था बताया, **ताकि ऐसा न हो कि [उसकी] इस समय की या पिछली दौड़ धूप व्यर्थ ठहरे**। क्या इस बात का अर्थ यह है कि उसने उस सुसमाचार की यथार्थता पर जिसका इतने सालों तक वह प्रचार करता रहा, सवाल उठाया? 1:6-9 में एक सच्चे सुसमाचार पर जबर्दस्त टिप्पणियों को ध्यान में रखते हुए, यह

विचार बेतुका लगता है। तो फिर इन शब्दों से उसका क्या अभिप्राय था?

अन्यजातियों में पौलुस की प्रेरिताई अन्य प्रेरितों पर और उसके प्रचार के बारे में उनके विचार पर निर्भर नहीं थी (1:11, 12)। तो भी उसने इस बात को समझा कि आवश्यक है कि अपनी गवाही और शिक्षा में सब प्रेरित एकजुट हों। नहीं तो यहूदियों के लिए एक सुसमाचार और अन्यजातियों के लिए किसी और सुसमाचार से तनाव बढ़ सकता था। इससे विश्वास के महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक यानी मसीह की कलीसिया में एकता में फूट पड़ने से वह संकट में पड़ सकता था (देखें 3:28)। प्रेरित नहीं चाहता था कि प्रभु की देह को यहूदी कलीसिया और अन्यजाति कलीसिया में बंटा हुआ देखे।

पतरस और यरूशलेम की कलीसिया को अन्यजातियों के साथ स्वाभाविक संगति की अवधारणा बिल्कुल समझ नहीं आई.पू.ी तरह से यकीन दिलाने के लिए कि प्रभु सब जातियों को सुसमाचार देना चाहता था (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16; लूका 24:47), पतरस के लिए एक विशेष दर्शन (प्रेरितों 10; 11) और प्रेरितों और यरूशलेम के प्राचीनों के लिए एक विशेष सभा की आवश्यकता पड़ी (प्रेरितों 15:1-29)। ऐसा लगता है कि अंत में उन्हें उस संदेश की समझ आ ही गई जो पौलुस के मन में शुरू से ही स्पष्ट था। परन्तु कई यहूदी मसीहियों के लिए, आने वाले कई सालों तक कलीसिया में अन्यजातियों के साथ मिलकर रहना परेशानी का कारण बना रहा। गलातियों के नाम पौलुस का पत्र पैदा होने वाली समस्याओं का स्पष्ट प्रमाण है।

पहली सदी के मध्य में यहूदी-अन्यजाति झगड़ा कलीसिया के सामने सबसे गम्भीर चुनौती रही होगी। इससे पूरी मण्डलियां खत्म हो सकती थीं जिनमें से कइयों को शुरू करने में पौलुस ने बड़ी लगन से परिश्रम किया था। वह अपने मिशनरी प्रयासों को जिनके लिए उसने इतना कष्ट सहा था, "व्यर्थ" नहीं जाने देना चाहता था (फिलिप्पियों 2:16; 1 थिस्सलुनीकियों 3:5; देखें 1 कुरिन्थियों 15:58; 2 कुरिन्थियों 6:1)। पौलुस ने मसीही जीवन के साथ-साथ अपनी सेवकाई को समझाने के लिए यूनानी खेलों से खेल-कूद के रूपक जैसे "दौड़ना" का इस्तेमाल कई बार किया (5:7; 1 कुरिन्थियों 9:24-27; फिलिप्पियों 3:14; 2 तीमुथियुस 2:5; 4:7, 8)।

पौलुस की गवाही की पुष्टि चाहे दमिश्क के मार्ग पर जी उठे मसीह के उसको दिए विशेष दर्शन से पूरी तरह से हो चुकी थी, परन्तु वह यह सुनिश्चित करना चाहता था कि वह अन्य प्रेरित और यरूशलेम के अगुवे अन्यजातियों के मिशन की अपनी समझ में एक हों। उसे विश्वास था कि कलीसिया में फूट से बचा जाना आवश्यक है ताकि कलीसिया व्यवहार में एक हो सके और इस प्रकार संसार की दृष्टि में एक रहे (यूहन्ना 17:11, 20, 21)।

आयत 3. पौलुस के यरूशलेम के अगुओं के साथ मुलाकात के समय उसके सहकर्मी **तीतुस को** जो उसके साथ था, **खतना कराने के लिए विवश नहीं किया गया** था। यह खतने का पहला उल्लेख है जो कि गलातियों के नाम पत्र में झगड़े का मुख्य कारण है। प्रेरित ने अपनी बात को समझाने के लिए अपने अन्यजाति सहकर्मी के उदाहरण का इस्तेमाल किया। यरूशलेम में अगुवे कहलाने वालों ने तीतुस का खतना आवश्यक नहीं माना। अन्यजाति मसीही के रूप में उसके लिए ऑपरेशन करवाने का कोई कारण नहीं था जो अब्राहम के समय से लेकर दो हज़ार वर्ष तक इब्रानी लोगों के लिए महत्वपूर्ण रहा था (उत्पत्ति 17:9-14, 23-27)।

यूनानी *Hellēn* (हेलेन) शब्द जिसका इस्तेमाल तीतुस के अन्यजाति बताने के लिए किया

जाता है जो यूनानी संस्कृति से प्रभावित था (रोमियों 1:16; 2:9, 10)। यह *Hellēnistēs* (हेलेनिस्टस) शब्द से अलग है जो यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदी के लिए इस्तेमाल होता है (प्रेरितों 6:1; 9:29)।

तीतुस के बारे में पौलुस का विचार प्रेरितों 16:1–3 में लूका द्वारा दिए गए विवरण वाली परिस्थिति के विपरीत लगता है जिसमें पौलुस के एक और अहम सहकर्मी तीमुथियुस का खतना प्रेरित द्वारा किया गया था। परन्तु वह कार्य सुविधा की बात थी क्योंकि तीमुथियुस की माता यहूदिन थी जबकि उसका पिता यूनानी था। उसका पिता अन्यजाति था जिस कारण तीमुथियुस का कभी खतना नहीं हुआ था। पौलुस का मानना था कि यदि यह युवक खतने के लिए मान जाए तो उनके मिशन कार्य में उन्हें अच्छे ढंग से स्वीकार किया जाएगा। दूसरी ओर तीतुस की कोई यहूदी पृष्ठभूमि नहीं थी जिस कारण उसके लिए ऑप्रेशन कराने का कोई मान्य कारण नहीं था। तीमुथियुस के खतने का उसके अनन्त उद्धार से कोई सम्बन्ध नहीं था।

आयत 4. पौलुस ने इस सारे झगड़े का कारण **झूठे भाइयों** को बताया जिन्हें यहूदी मत की शिक्षा देने वाले कहा जाता है (2 कुरिन्थियों 11:26)। ये लोग जिनकी जड़ें फरीसियों के पंथ में थीं इस बात पर ज़ोर देते थे कि उद्धार पाने के लिए खतना कराना या व्यवस्था को मानना अनिवार्य है (प्रेरितों 15:1, 5)। उनका कहना था कि मसीही बनने के लिए अन्यजातियों के लिए यहूदी बनना आवश्यक है। स्पष्टतया यहूदी मत की शिक्षा देने वालों को अन्यजातियों को शुद्ध रखने की चिंता थी और वह व्यवस्था को रोकने वाले सकारात्मक रूप में देखते थे। और तो और वे खतनारहित अन्यजातियों के साथ संगति के लिए अविश्वासी यहूदियों द्वारा यहूदी मसीहियों की अलोचना नहीं चाहते थे। पौलुस के अनुसार यहूदी मत की शिक्षा देने वाले "झूठे भाई" थे क्योंकि वे अन्यजाति मसीहियों को बिना खतने के संगति में स्वीकार नहीं करते थे। इस प्रकार से वे "सुसमाचार का सबके लिए होने का इनकार करते थे।"[8]

कुछ "झूठे भाई" अन्यजाति मसीहियों को मिली स्वतन्त्रता का **भेद लेने चोरी से घुस आए थे**। यह भाषा अंताकिया और गलातिया की अन्यजाति बहुसंख्यक मण्डलियों में यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के आ जाने और व्यवस्था के मुताबिक चलने के अपने संदेश के साथ लोगों को बहकाने की कोशिश करने वालों के लिए कहा गया हो सकता है और अधिक सम्भावना यह है कि यह उन यहूदी मत की शिक्षा देने वालों को बताता है जो यरूशलेम में उनकी निजी सभा में आ गए थे। "चोरी से घुस आए" (*pareisaktos*, पैरेसक्टोस) का सम्बन्ध 2 पतरस 2:1 में "झूठे उपदेशकों" के लिए जो स्थानीय मण्डलियों में "नाश करने वाले पाखण्ड का उदघाटन छिप-छिप कर" करते थे, बैन विड्रिंटन तृतीय के अनुसार *pareisaktos* (पैरेसक्टोस) "सैनिक भाषा" थी "जिसका बाद में राजनैतिक अलंकार में इस्तेमाल" किया गया।[9] "भेद लेकर" जासूसी करने वालों के प्रतिकूल इरादों का संकेत देता है (देखें 2 शमूएल 10:3; 1 इतिहास 19:3)। ये लोग "अंडरकवर एजेंटों और षड्यन्त्रकारियों जैसे" थे।[10]

उस स्वतंत्रता का जो मसीह यीशु में हमें मिली है, व्यवस्था से अलग नई वाचा के द्वारा मिले पवित्र जीवन जीने की सामर्थ की ओर संकेत है (इफिसियों 2:14, 15; कुलुस्सियों 2:13, 14)। यहूदी मत की शिक्षा देने वाले विश्वासियों को व्यवस्था के **दास** बनाकर उन्हें उस स्वतन्त्रता से वंचित करना चाहते थे। "स्वतन्त्रता" और "स्वतन्त्र" गलातियों की पुस्तक में

मुख्य शब्द हैं जो कुल ग्यारह बार मिलते हैं।[11] ये हिन्दी शब्द यूनानी संज्ञा शब्द (*eleutheria,* एलुथेरिया) और विशेषण शब्द (*eleutheros,* एलुथेरोस) के अनुवाद हैं।

यीशु ने बेशक ग्रेट कमीशन दिया था जिसमें "सब जातियों के लोगों को चेले बनाना शामिल था" (मत्ती 28:19) और पतरस ने "सब दूर दूर के लोगों के लिए" उद्धार की प्रतिज्ञा की बात कही थी (प्रेरितों 2:39)। फिर भी अन्यजातियों के बीच में जाना तुरन्त या स्वाभाविक ही नहीं हो गया। इसके लिए रोमी सूबेदार कुरनेलियुस और उसके घराने को सुसमाचार सुनाने के लिए पतरस को ही यकीन दिलाने के लिए एक आश्चर्यकर्म के दर्शन की आवश्यकता पड़ी (प्रेरितों 10:9-16)। इसके बाद यरूशलेम में कुछ यहूदी मसीहियों ने अन्यजातियों के साथ खाना खाने की संगति के लिए पतरस की कड़ी आलोचना की (प्रेरितों 11:1-3)। अपने कार्यों के लिए उसके समझाने के बाद उन्होंने यह जानकर कि परमेश्वर ने "अन्यजातियों को भी जीवन का दान दिया" उसकी महिमा की (प्रेरितों 11:18)। इस घटना से अंताकिया में बहुत से अन्यजातियों का मनपरिवर्तन हुआ। उनके सुसमाचार को ग्रहण करने की खबर जब यरूशलेम में पहुंची तो कलीसिया ने नये बने मसीही लोगों को सिखाने और उनके प्रोत्साहन के लिए अंताकिया में बरनबास को भेजा। प्रेरितों 11:19-26 के अनुसार बरनबास तरसुस में गया और पौलुस को अंताकिया में वापस ले गया जहां दोनों ने बहुत से लोगों को सिखाया। इस प्रयास के बाद पहली मिशनरी यात्रा हुई जिसके दौरान पौलुस और बरनबास मसीह का सुसमाचार लेकर असंख्य अन्यजातियों के पास गए (प्रेरितों 14:27)। ऐसा लगता है कि अन्यजाति लोग संदेश को इतनी तेज गति से ग्रहण कर रहे थे कि कुछ यहूदियों को कलीसिया पर अपना नियन्त्रण खोने का डर सताने लगा।

जब यहूदियों ने यीशु को मसीहा मान लिया तो वे यहूदी होना बंद नहीं हो गए। बहुत से लोग जिनमें पौलुस भी था कुछ यहूदी रीतियों को मानते रहे। प्रेरितों 21:20 बताता है कि यरूशलेम के "कई हज़ार" विश्वासी यहूदी "व्यवस्था के लिए धुन लगाए" हुए थे। व्यवस्था को थोपना शायद इन कुछ यहूदी मसीहियों की सोच थी कि वे अन्यजाति विश्वासियों को अपने वश में रख सकें। कुछ तो अन्यजातियों को यह भी बताते थे कि यदि "मूसा की रीति पर [उनका] खतना नहीं होता तो वे उद्धार नहीं पा सकते" (प्रेरितों 15:1)।

आयत 5. पौलुस जो "सब मनुष्यों के लिए सब कुछ बना ... सब कुछ सुसमाचार के लिए करता" था (1 कुरिन्थियों 9:22, 23) और निर्बल भाई के लिए अपने अधिकार तक त्याग देने को तैयार था (1 कुरिन्थियों 8:13), उसने कर्मकांडी के सामने हार नहीं मानी।[12] इस संदर्भ में पौलुस अन्यजाति मसीहियों के अधिकारों की खातिर लड़ रहा था न कि अपने अधिकारों की खातिर। उसने और उसके साथियों ने **एक घड़ी भर** यहूदी मत की शिक्षा देने वालों **के अधीन होना न माना**। "एक घड़ी" (*hōra,* होरा) का इस्तेमाल यहां समय की छोटी सी अवधि के लिए किया गया है; कई संस्करणों में यहां "पल भर के लिए" (NIV; NRSV; ESV), "घण्टा" (NASB- अनुवादक), "एक क्षण के लिए" (NJB; REB) है। पौलुस कुछ ऐसा कहना या करना नहीं चाहता था जिससे उसके पाठकों के विश्वास को हानि पहुंचे। वह चाहता था कि **सुसमाचार की सच्चाई** उन **में बनी रहे**।

यह सुझाव देते हुए कि तीतुस का खतना वास्तव में निर्बलता के क्षण में हुआ था, कुछ प्राचीन हस्तलेखों में अलग अलग विवरण मिलते हैं। यह पठन अधिक संदेहास्पद है क्योंकि

इससे वह सारा तर्क ही नष्ट हो जाएगा जो पौलुस दे रहा था।[13] आखिर प्रेरित तीतुस को जो एक खतना रहित अन्यजाति मसीह था, एक आदर्श के रूप में इस्तेमाल कर रहा था जिसकी नकल उसके अन्यजाति पाठक कर सकते थे।

आयत 6. एक बार फिर से पौलुस ने **जो कुछ समझे जाते थे** (देखें 2:2) उनका जिक्र किया, चाहे 2:9 तक इनका कोई नाम नहीं आता। NIV में इस समूह को "ऊंची प्रतिष्ठा रखने वालों" के रूप में बताया गया है। पौलुस यहां कह रहा था कि ये लोग यरूशलेम की कलीसिया के सम्मानित अगुवे थे।

कोष्ठक में लिखी गई टिप्पणी **वे चाहे कैसे भी थे मुझे इस से कुछ काम नहीं** की व्याख्या यह अर्थ निकालने में नहीं जानी चाहिए कि पौलुस इन भाइयों से प्रेम नहीं करता था या इनकी प्रशंसा नहीं करता था। यहूदी मत की शिक्षा देने वालों ने इन लोगों को ऊंचा करते हुए पौलुस को नीचा किया था परन्तु कलीसिया के ये सभी अगुवे हर प्रकार से बराबर थे।

कोष्ठक में रखी गई शेष बात **परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता** का अनुवाद अक्षरश: "परमेश्वर किसी का चेहरा नहीं देखता" के रूप में की जा सकती है। पुराने नियम में "चेहरा उठाना" मुहावरे का अर्थ "पक्ष दिखाना" है। परमेश्वर पक्षपाती नहीं है इसलिए वह पक्षपात नहीं दिखाता (लूका 20:21; प्रेरितों 10:34; रोमियों 2:11; इफिसियों 6:9; कुलुस्सियों 3:25; 1 पतरस 1:17)। एफ़. एफ़. ब्रूस के अनुसार इस संदर्भ में इस अभिव्यक्ति का अर्थ है कि "परमेश्वर पौलुस की तरह जिसे प्रेरिताई का अपना कमिशन बाद में मिला ऐतिहासिक यीशु के साथियों या रिश्तेदारों का पक्ष नहीं करता।"[14] पौलुस यह कह रहा था कि उसके संदेश में इन अगुओं का **कुछ भी नहीं** था। उसे सुसमाचार ईश्वरीय प्रकाशन के द्वारा मिला था न कि मनुष्यों की ओर से (1:11, 12)।

आयत 7. जो "कुछ समझे" जाते थे, उनमें से एक **पतरस** का नाम इस आयत में है। पौलुस ने इस बात पर ज़ोर दिया कि उसे और पतरस दोनों को सेवकाई का काम प्रभु के द्वारा **सौंपा गया** था (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 2:4)। वे दो अलग-अलग क्षेत्रों में एक ही सुसमाचार का प्रचार कर रहे थे (1 कुरिन्थियों 15:3, 4, 11)।

पौलुस को **खतना रहितों** यानी अन्यजातियों **के लिए सुसमाचार सुनाना सौंपा गया था**। मसीह ने दमिश्क के मार्ग पर उसे दिखाई देने के समय, उसे अन्यजातियों के लिए प्रेरित होने के लिए बुलाया था (प्रेरितों 26:16-18; देखें 9:15, 16)। इसका अर्थ यह नहीं है कि पौलुस ने यहूदियों की उपेक्षा की। असल में प्रचार की उसकी मिशनरी नीति किसी नये नगर में जाने पर पहले आराधनालयों में मसीह का प्रचार करने की थी (प्रेरितों 13—19)। इस प्रकार उसने "पहले तो यहूदी" को वचन सुनाया (रोमियों 1:16)। परन्तु संदेश सुनाने के लिए अपना अधिकतर समय पौलुस ने अन्यजातियों में बिताया।

दूसरी ओर पतरस को **खतना किए हुए लोगों** यानी यहूदियों **के लिए** प्रचार का काम सौंपा गया था। उसने पहला सुसमाचार संदेश पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में दिया था (प्रेरितों 2) और यरूशलेम और यहूदिया में उसे बड़ी सफलता मिली थी। फिर भी पतरस का यहूदियों पर ज़ोर देना उसे अन्यजातियों में सेवकाई करने से रोक नहीं पाया। असल में कुरनेलियुस और उसके घराने के लोगों में प्रचार करके कलीसिया में आने के लिए अन्यजातियों के लिए द्वार उसी

ने खोला था (प्रेरितों 10) और अपनी पूरी सेवकाई के दौरान उसके अन्यजातियों में प्रचार करना जारी रखा था (देखें 1 कुरिन्थियों 1:12; 3:22; 1 पतरस 1:1, 14, 18)।

आयत 8. (हिन्दी की तरह-अनुवादक) NASB में इस आयत को कोष्ठक में रखा गया है: **(क्योंकि जिसने पतरस से खतना किए हुओं में प्रेरिताई का कार्य बड़े प्रभाव सहित करवाया, उसी ने मुझ से भी अन्यजातियों में प्रभावशाली कार्य करवाया)।** कहने का मतलब यह है कि उसी परमेश्वर ने पतरस को ("खतना किए हुए लोगों" यानी यहूदियों) और पौलुस ("अन्यजातियों") को प्रेरिताई की सेवकाइयां दी थीं। परमेश्वर ने इन दोनों को आश्चर्यकर्मों के चिह्नों के साथ प्रचार की पुष्टि करने की सामर्थ के साथ अपना एक ही संदेश दिया था। यदि जो कुछ यह दोनों कर रहे थे उसके पीछे की सामर्थ परमेश्वर था, तो पौलुस की आलोचना कौन कर सकता था? "प्रभाव सहित करवाया" के लिए यूनानी शब्द (*energeō*, एनर्जियो) अंग्रेज़ी भाषा के शब्द "energy" का आधार है। "प्रेरिताई" के लिए शब्द (*apostolē*, अपोस्टल) का अर्थ प्रेरित का पद है, नये नियम में चार बार मिलता है (2:8; प्रेरितों 1:25; रोमियों 1:5; 1 कुरिन्थियों 9:2)।

आयत 9. पौलुस ने एक बार फिर से उनकी बात की जो **समझे जाते** (देखें 2:2, 6) थे; उसने उनके नाम **याकूब और कैफा और यूहन्ना** बताए। "प्रभु के भाई याकूब" का नाम 1:19 में दिया गया था। यहां उसे केवल "याकूब" कहा गया क्योंकि अब उसे यूहन्ना के भाई याकूब से जो शहीद हो गया था, अलग करना अनावश्यक था (प्रेरितों 12:1, 2)। "कैफा" जो बारह प्रेरितों में से एक था, की बात गलातियों 1:18 में हुई थी। ऊपर की आयतों में (2:7, 8) में उसका उल्लेख है, चाहे उसके अरामी नाम "कैफा" के बजाय उसका यूनानी नाम "पतरस" दिया गया है। "यूहन्ना" जो बारह में से एक था, तिकड़ी को पूरा करता है।

सुसमाचार के विवरणों में से ब्रूस ने अनुमान लगाया कि पतरस, याकूब और यूहन्ना यीशु के करीबी लोगों में से (मरकुस 5:37; 9:2; 14:33) आरम्भ में यरूशलेम की कलीसिया के **खम्भे** थे। परन्तु यूहन्ना के भाई याकूब की हत्या हो गई थी जिस कारण उसकी जगह प्रभु का भाई याकूब (प्रेरित नहीं) खम्भा बन गया था। एक और सम्भावना यह है कि बाद वाला यह याकूब आरम्भ में एक अगुवा बन गया जिस कारण मूल में चार खम्भे यानी दिग्गज थे।[15]

1:18, 19 में पतरस का नाम याकूब के नाम से पहले आता है; परन्तु इस संदर्भ में याकूब का नाम पहले आता है। शायद इन आयतों में लिखी गई घटनाओं के बीच के कई वर्षों के दौरान (देखें 2:1), याकूब यरूशलेम की कलीसिया में पतरस से अधिक प्रभावशाली व्यक्ति बन गया था (प्रेरितों 15:13; 21:18)। ऐसा पतरस के यरूशलेम और यहूदिया से बाहर रहने के कारण हुआ हो सकता है (प्रेरितों 8:14; 9:32, 43; 10:24)।[16]

कारण जो भी हों पर इन तीनों को "खम्भे" माना जाता था। डेरे और मन्दिर के निर्माण में इस्तेमाल होने वाले खम्भों के रूप में सप्तति (LXX) में यूनानी शब्द *stulos* (स्टुलोस) कई बार आता है। किसी विशेष संस्थान को स्थिरता और सहारा देने के लिए इस रूपक का इस्तेमाल आम बात थी (देखें प्रकाशितवाक्य 3:12)। लाइटफुट के अनुसार, "खम्भे" वह अभिव्यक्ति थी जिसका इस्तेमाल यहूदी लोग "व्यवस्था के सिखाने वालों" के लिए आम करते थे।[17]

अपनी निजी मुलाकात के दौरान याकूब, कैफा और यूहन्ना ने उस अच्छे काम को स्वीकार

किया जो पौलुस और बरनबास कर रहे थे। उन्होंने **उस अनुग्रह को जो** पौलुस को **मिला था** मान लिया कि किस प्रकार परमेश्वर ने उसे **अन्यजातियों के पास** जाने की सेवकाई सौंपी थी (देखें 1:15, 16)। और पौलुस और बरनबास को **संगति का दाहिना हाथ दिया।** मित्रता और स्वीकृति को दिखाते यहूदी और अन्यजाति दोनों को दाहिना हाथ मिलाना एक सामान्य प्रथा थी।[18] आर. ऐलन कोल ने कहा है कि यह तथ्य कि इन लोगों ने "दाहिने हाथ पकड़े ... यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के लिए एक कड़ा प्रहार रहा होगा।"[19]

आयत 10. याकूब, कैफा और यूहन्ना ने अन्यजाति मिशन को अपना समर्थन देते हुए आग्रह किया कि पौलुस और बरनबास **कंगालों की सुधि लें**। उनकी केवल इतनी ही विनती थी; अन्यजाति मसीहियों के लिए व्यवस्था को मानने या खतना करवाने की कोई शर्त नहीं थी। इस संदर्भ में "कंगालों" (*ptōchos*, प्टोचो) का अर्थ मुख्यतया यरूशलेम की कलीसिया के दरिद्र सदस्य हैं।[20] पौलुस ने कहा कि कंगालों की सहायता करने के **इसी काम को करने का** वह **आप भी यत्न कर रहा था**।

NIV में आयत के पहले भाग का अनुवाद "उन्होंने केवल इतना कहा कि हमें गरीबों को याद रखना *जारी* रखना चाहिए" है। यह अनुवाद विशेष रूप में उपयुक्त होगा यदि यरूशलेम के खम्भों यानी दिग्गजों के साथ पौलुस की मुलाकात अकाल राहत के लिए उसके जाने के समय हुई हो (प्रेरितों 11:27-30)। यदि यह सही है तो पौलुस और बरनबास उस समय जरूरतमंदों को याद रख रहे थे और उनसे इसी भावना से ऐसा करते रहने का आग्रह किया गया।

बाद में अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा पर पौलुस ने यरूशलेम के निर्धन पवित्र लोगों के लिए अन्यजाति कलीसियाओं से चंदा इकट्ठा किया (देखें प्रेरितों 24:17; 1 कुरिन्थियों 16:1-4; 2 कुरिन्थियों 8; 9)। प्रेरित ने एक बार फिर से यीशु को यह कहते हुए उद्धृत किया, "लेने से देना धन्य है" (प्रेरितों 20:35)। उसने यह भी समझाया कि अन्यजातियों ने यहूदियों से आत्मिक आशिषें पाई थीं इसलिए अन्यजातियों के लिए यहूदियों की आर्थिक रूप में सहायता करना बिल्कुल सही है (रोमियों 15:26, 27)। निर्धनों, खासकर निर्धन मसीहियों के लिए पौलुस की चिंता ने उसे अपनी ही शिक्षा पर चलने को विवश किया: "इसलिये जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें, विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ" (6:10)।

पतरस के साथ पौलुस का सामना (2:11-21)

अन्यजातियों को यहूदियों की तरह रहने को विवश करना (2:11-14)

[11]पर जब कैफा अन्ताकिया में आया, तो मैं ने उसके मुंह पर उसका सामना किया, क्योंकि वह दोषी ठहरा था। [12]इसलिए कि याकूब की ओर से कुछ लोगों के आने से पहले वह अन्यजातियों के साथ खाया करता था, परन्तु जब वे आए तो खतना किए हुए लोगों के डर के मारे वह पीछे हट गया और किनारा करने लगा। [13]उसके साथ शेष यहूदियों ने भी कपट किया, यहां तक कि बरनबास भी उनके कपट में पड़ गया। [14]पर जब मैं ने देखा कि वे सुसमाचार की सच्चाई पर सीधी चाल नहीं चलते, तो मैं ने सब के सामने कैफा से कहा, "जब तू यहूदी होकर अन्यजातियों के समान चलता है और यहूदियों के समान नहीं

तो तू अन्यजातियों को यहूदियों के समान चलने को क्यों कहता है ?''

वह समय जब पतरस और पौलुस के बीच यह झगड़ा हुआ पूरे पत्र के सबसे विवादास्पद प्रश्नों में से एक है। इसका सम्बन्ध पत्र की तिथि तथा प्रेरितों के काम में लूका के विवरण से मेल खाने की समस्या के साथ है। घटनाओं का लूका का क्रम पौलुस के जीवन और कामों का पूरा विवरण होने का दावा नहीं करता, फिर भी यह घटनाओं को सिलसिलेवार (या तर्कसंगत क्रम में) रखने का दावा करता है।

इसी प्रकार से पौलुस ने गलातियों 1 और 2 की घटनाओं को क्रमबद्ध ढंग में लिखा। उसने निम्न घटनाओं का वर्णन किया: (1) उसकी ईश्वरीय बुलाहट और अरब तथा दमिश्क में काम (1:15-17); (2) यरूशलेम में ''तीन वर्ष के बाद'' उसका जाना (1:18); (3) तरसुस और अंताकिया में ''सीरिया और किलिकिया के प्रांतों में'' उसका काम (1:21); (4) ''चौदह वर्ष के बाद'' उसका यरूशलेम जाना (2:1); और अंत में (5) अंताकिया में रहते समय उसका पतरस को डांटना (2:11)।

प्रेरितों के काम में चाहे पतरस के साथ पौलुस के टकराव का कोई वर्णन नहीं है पर उस पुस्तक में हमें उन अवसरों का पता चलता है जब पौलुस अंताकिया में था। अपने मनपरिवर्तन के बाद यरूशलेम में पहली बार जाने के बाद प्रेरितों 9:26-30 और गलातियों 1:18 दोनों जगह संकेत दिया गया है कि यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों ने उसकी हत्या करने की कोशिश की थी, जिस कारण भाइयों ने उसे अपने गृह नगर तरसुस में भेज दिया था। बाद के कालों का जब पौलुस अंताकिया में था उल्लेख इन वचनों में किया गया है:

प्रेरितों 11:25, 26—यह अवसर अंताकिया में उसके आरम्भिक काम के दौरान था। कैसरिया में कुरनेलियुस के महत्वपूर्ण मनपरिवर्तन के बाद बरनबास अंताकिया की कलीसिया के नये नये आरम्भ हुए काम में सहायता के लिए पौलुस को तरसुस से लेकर आया। यहां पर उस प्रारम्भिक बड़े काम में, जो साफ़ तौर पर यहूदी/अन्यजाति पहली मिली जुली मण्डली थी, मे दो जन लगे हुए थे। यह काम ''एक वर्ष तक'' चला और अन्ताकिया ही में ''चेले सबसे पहले मसीही कहलाए'' (प्रेरितों 11:26)।[21]

प्रेरितों 12:25—13:3—प्रेरितों 11:29, 30 में यरूशलेम में अंताकिया से आई आर्थिक राहत देने के बाद पौलुस और बरनबास अंताकिया में लौट गए, जहां से वे यूहन्ना मरकुस के मौसेरे भाई बरनबास को अपने साथ ले आए। अफसोस कि वचन में यह नहीं लिखा गया कि इस बीच कितना समय बीता। वचन यह संकेत देता है कि अंताकिया में ही पौलुस और बरनबास को पहली मिशनरी यात्रा पर जाने को कहा गया था।

प्रेरितों 14:26-28—जब पहली मिशनरी यात्रा खत्म होने को थी तो पौलुस और बरनबास अंताकिया को लौट आए। अपनी रिपोर्ट देने के बाद ''वे चेलों के साथ बहुत दिन तक रहे'' (प्रेरितों 14:28)। उनके रहने के दौरान या इसके अंत के निकट ''कुछ लोग यहूदिया से आकर भाइयों को सिखाने लगे: 'यदि मूसा की रीति पर तुम्हारा खतना न हो तो तुम उद्धार नहीं पा सकते' '' (प्रेरितों 15:1)। इस झूठी शिक्षा के कारण ही यरूशलेम में सभा हुई जिसमें पौलुस और बरनबास गए थे और उन्हें इसके बारे में बताया (प्रेरितों 15:12)। पतरस और याकूब दोनों

ने गड़बड़ करने वालों के विरुद्ध गवाही दी (प्रेरितों 15:6-11, 13-21) और उनकी गवाही से अंताकिया, सीरिया और किलिकिया की कलीसियाओं के नाम वहां इकट्ठा लोगों की ओर से एक पत्र लिखा गया। पत्र में लिखा गया: ''हमने सुना है कि हम में से कुछ ने वहां जाकर, तुम्हें अपनी बातों से घबरा दिया; और तुम्हारे मन उलट दिए हैं परन्तु हम ने उनको आज्ञा नहीं दी थी'' (प्रेरितों 15:24)।

ऊपर दी गई तीन भेंटों का समय सभवत: वह समय था जब पौलुस ने पतरस का सामना किया। उसके बाद की भेंटें संदेहपूर्ण लगती हैं क्योंकि पतरस ने प्रेरितों 15:7-11 में यरूशलेम की सभा की अपनी सामर्थपूर्ण गवाही के बाद इतना नहीं गिरना था।

प्रेरितों 15:30-35—यरूशलेम की सभा के बाद पौलुस, बरनबास, यूहन्ना जो मरकुस कहलाता है, सीलास और अन्य लोग प्रेरितों और यरूशलेम के प्राचीनों के निर्णय को सुनाते हुए अंताकिया में लौट गए। फिर वे ''अंताकिया में रह गए और अन्य बहुत से लोगों के साथ प्रभु के वचन का उपदेश करते और सुसमाचार सुनाते थे'' (प्रेरितों 15:35)। उस समय पौलुस और बनरबास की यूहन्ना की मरकुस के कारण नाराजगी थी। पौलुस ने सिलास को चुना और दूसरी मिशनरी यात्रा पर निकल पड़ा जबकि बरनबास ने यूहन्ना मरकुस को लिया और साइप्रस को चला गया (प्रेरितों 15:36-41)।

प्रेरितों 18:22, 23—दक्षिणी गलातिया की कलीसियाओं में दोबारा से शुरू-शुरू में जाने के बाद (प्रेरितों 16:1-5) पौलुस और सीलास त्रोआस में मकिदुनिया तक पार गए और अखाया में से होते हुए दक्षिण की ओर बड़े (एथेंस और कुरिन्थ)। कुरिन्थुस में ''डेढ़ वर्ष'' बताने के बाद (प्रेरितों 18:11) पौलुस किंख्रिया से जहाज में इफिसुस को (एशिया माइनर के तट पर) और फिर आगे कैसरिया को गया (जहां अन्यजाति मिशन का आरम्भ हुआ था)। वहां से वह भाइयों से मिलने यरूशलेम को गया और फिर अंताकिया में लौट आया और ''कुछ दिन वहां'' रहा (प्रेरितों 18:18-23)।

अंताकिया से फिर से जाने के बाद, इस बार अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा पर पौलुस ''एक और से गलातिया और फ्रूगिया के चेलों को सब ओर चेलों को स्थिर करता फिरा'' (प्रेरितों 18:23)। इफिसुस में काम करते हुए उसने काफ़ी समय ''तीन वर्ष'' बिताया (प्रेरितों 20:31)। मकिदुनिया और अखाया की कलीसियाओं में जाने के बाद वह सोर और पतुलिमयिस में रुककर अंत में कैसरिया में जा टिका। फिर पौलुस यरूशलेम में ऊपर को गया जहां उसे गिरफ्तार कर लिया गया और अंताकिया में अपनी सहायता करने वाली कलीसिया के पास लौटने से रोक दिया गया। प्रेरित को अंत में रोम ले जाया गया वहां उसे नजरबंद कर दिया गया। बेशक प्रमाण इस बात का संकेत देता है कि उसे छोड़ दिया गया था पर हमें और किसी अवसर का पता नहीं है कि वह सीरिया/फलस्तीन में कब लौटा होगा। इसलिए हो सकता है कि इस जीवन में वह दोबारा अंताकिया के अपने भाइयों से कभी न मिला हो।

उन सम्भावनाओं की समीक्षा करके कि पौलुस ने अंताकिया में पतरस का सामना कब किया था, पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा के बाद तीसरा विकल्प सबसे सम्भव लगता है। यहूदी मसीही इतने सारे अन्यजातियों को देख जिसमें इससे पहले अधिकतर यहूदी कलीसिया का ही दबदबा था, किसी भी और बात से बढ़कर इस समय अन्यजाति मिशन की बात अधिक

समझ में आती है। शायद इन यहूदी मसीहियों को डर था कि अन्यजाति उनकी यहूदी पहचान को दबाकर खत्म न कर दें।

आयत 11. अंताकिया को यूनानी साम्राज्य के विभाजन के बाद सिकन्दर महान के एक सेनापति सिलियुकस ने 300 ई.पू. के लगभग ओरंटस नदी[22] पर बसाया था (देखें दानिय्येल 8:8, 21, 22)। यह सिलयुसिड (सीरिया) राज्य की शाही राजधानी बन गया था। यह नगर भूमध्य सागर से बीस मील के लगभग अंदर की ओर था जिसकी बंदरगाह सिलुकिया था। यह यरूशलेम से 300 मील उत्तर की ओर था। अंताकिया शाही मार्ग पर बसा था जो पूर्व में टिग्रिस नदी पर सिलूकिया से आरम्भ होकर नगर के बीचों बीच जाते हुए किलिकिया के तरसुस तक और पश्चिम में एजियन समुद्र के पास इफिसुस तक जाता था। अंताकिया के महानगर होने के साथ-साथ भौगौलिक स्थिति के कारण इसने कारोबार से काफ़ी दौलत पाई थी।

पहली सदी तक, अंताकिया रोम और सिकन्दरिया के बाद रोमी साम्राज्य का तीसरा प्रमुख नगर था। इसके निवासी सीरियाई, यूनानी, रोमी और यहूदी लोग रहते थे। नगर में सिकन्दरिया (7,00,000 पुस्तकें) और परगमुम (2,00,000 पुस्तकें) जितना बड़ा पुस्तकालय था। अंताकिया सुन्दर था क्योंकि इसमें जल की भरमार थी जो डैफने के प्राकृतिक स्रोतों से आता था। पांच मील दक्षिण की ओर बसा यह उपनगर मनोरंजन का प्रसिद्ध स्थान भी था।[23]

अंताकिया सुसमाचार तथा अन्यजाति मिशन के विस्तार के लिए आदर्श जगह थी। कैसरिया में कुरनेलियुस और उसका घराना चाहे अन्यजातियों में परिवर्तित होने वाले सबसे पहले थे (प्रेरितों 10:1—11:18), परंतु अन्यजाति मिशन का तेजी से बढ़ना अंताकिया में ही हुआ था। बरनबास और पौलुस ने बड़ी सफ़लता के साथ इसी जगह पर इकट्ठे काम किया था (प्रेरितों 11:19-26)। अंताकिया की कलीसिया ने ही अकाल राहत देकर पौलुस और बरनबास को यरूशलेम को भेजा था (प्रेरितों 11:27-30), और यहीं से इन लोगों को पहली मिशनरी यात्रा पर भेजा गया था (प्रेरितों 13:1—14:28)।

आरम्भ में यरूशलेम की कलीसिया ने बरनबास को अंताकिया में काम के लिए भेजा था। बीच में कहीं **कैफा** (पतरस) वहां पर गया, शायद वह भी काम में भागीदार बनना चाहता होगा। वचन यह नहीं बताता है कि पतरस अंताकिया में कितनी देर तक रहा परन्तु दूसरों को यह जानने में देर नहीं लगी थी कि उसे "अन्यजातियों के साथ खाने में कोई हिचक नहीं थी।"[24]

जब पतरस अन्यजाति मसीहियों से पीछे हटा तो पौलुस ने **उसके मुंह पर उसका सामना किया**; उसने प्रेम के कारण उसका सीधे सामना किया और उसकी आत्मा की चिंता की। पतरस जो तरीका अपना रहा था उसके कारण वह **दोषी ठहरा था**। NIV1984 में कहा गया है कि वह "साफ़ तौर पर गलत था।" यह कमज़ोर अनुवाद *kataginōskō* (कैटागिनोस्को) शब्द की गम्भीरता को नहीं पकड़ पाता।[25]

आयत 12. श्रद्धालु अन्यजातियों के लिए चाहे यहूदियों के साथ आराधनालय की सेवाओं में भाग लेना आम बात थी पर यहूदी लोग उनके साथ खाते नहीं थे। पतरस ने अलग तरीका अपनाया था क्योंकि उसे शमौन, चमड़े का धंधा करने वाले के घर की छत पर प्रार्थना करते समय अशुद्ध जानवरों से भरी चादर का दर्शन मिला था (प्रेरितों 10:9-16)। एक आवाज़ ने उससे कहा था, "जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अशुद्ध मत कह" (प्रेरितों 10:15)।

इसी दर्शन के बाद पतरस अन्यजातियों में सुसमाचार सुनाने के लिए कुरनेलियुस के घर गया था। पतरस ने वहां पर इकट्ठा हुए लोगों के समूह को बताया था कि यहूदियों के लिए विदेशियों से मिलना या उनके पास जाना गैर कानूनी था, परन्तु परमेश्वर ने उसे दिखाया कि "किसी मनुष्य को अपवित्र या अशुद्ध" नहीं मानना चाहिए (प्रेरितों 10:28)। कुरनेलियुस के घराने के लोगों को सुसमाचार सुनाने और उन्हें बपतिस्मा देने के बाद पतरस को कुछ दिनों तक उनके साथ रहने के लिए निमंत्रण दिया गया था (प्रेरितों 10:48)। चाहे वे लोग अन्यजाति थे पर उसने उनके साथ खाया था (प्रेरितों 11:3)। इसी प्रकार से पतरस जब अंताकिया में रुका **वह अन्यजातियों के साथ खाया करता था**।

अन्यजातियों के साथ पतरस की मेज की संगति अंताकिया में **कुछ लोगों के आने से** भंग हो गई। वे स्पष्टतया यरूशलेम से आए यहूदी मसीही थे जिनके मन में व्यवस्था के लिए जुनून था। उन्हें **याकूब की ओर से ... आने** वाले दिखाया गया है जो कि प्रभु का भाई था (1:19; 2:9)। बेशक वे याकूब को अच्छी तरह से जानते थे और हो सकता है कि उसी ने उन्हें अंताकिया में भेजा भी हो परन्तु यह अनुमान नहीं लगाना चाहिए कि उसने यहूदी और अन्यजाति मसीहियों के बीच सामाजिक अलगाव थोपने के लिए उन्हें भेजा। बाद में यरूशलेम की सभा के बाद लिखे गए पत्र में प्रेरितों और यरूशलेम के प्राचीनों ने उन कुछ लोगों के बारे में लिखा जो उन्हीं की ओर से आए थे परन्तु जिन्हें उन्होंने "कोई" आज्ञा नहीं दी थी (प्रेरितों 15:24)।

यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के अंताकिया में पहुंचने पर पतरस **खतना किए हुए लोगों के डर के मारे पीछे हट गया और किनारा करने लगा**। स्पष्टतया यदि वह अन्यजाति मसीहियों के साथ खाता था तो यरूशलेम से आए यहूदी मसीहियों ने उसे अशुद्ध मानना था और उसके साथ मेज की संगति नहीं करनी थी। "अशुद्ध" अन्यजातियों के साथ खाने से परहेज़ करने से पतरस ने अपने साथी यहूदियों के बीच अधिक स्वीकार्य हो जाना था। "पीछे हटना" के लिए यूनानी शब्द (*hupostellō,* हुपोस्टैलो) "किसी आड़ में छिपकर ली गई पोज़िशन के लिए आश्रय या मोर्चाबंदी को दिखाता हुआ सैनिक या राजनैतिक शब्द" है।[26]

पतरस नहीं चाहता था कि उसके अपने यहूदी भाई उसकी आलोचना करें या उसे समाज से निकाल दें। अन्यजातियों से किनारा करने के उसके कार्य से "उसके खतनारहित भाइयों पर अशुद्ध होने का धब्बा लग सकता था।"[27] उसका पीछे हटना उस दर्शन से जो उसे परमेश्वर की ओर से मिला था, कैसरिया में कुरनेलियुस के घर उसके कामों से और अंताकिया में उसके पिछले काम से मेल नहीं खाता।

पतरस के अन्यजातियों के साथ खाने की बात चाहे साधारण खाने की लगती हो परन्तु इस पर हैरानी होती है कि प्रभु भोज मनाने पर इस व्यवहार का कितना असर हो सकता है। क्या यरूशलेम से आए यहूदी मसीहियों ने अन्यजाति मसीहियों के साथ आराधना की भी? उनके प्रभु की मेज पर इकट्ठा होने का समय आने पर क्या हुआ होगा।

आयत 13. पतरस एक प्रेरित और कलीसिया का अगुआ था इस कारण उसके कामों से **उसके साथ शेष यहूदियों ने भी कपट किया**। अंताकिया में रहने वाले यहूदी मसीहियों ने जो पहले अन्यजाति विश्वासियों के साथ मेज की संगति किया करते थे, उनसे पीछे हट गए। "भी कपट किया" का अनुवाद *sunupokrinomai* (सुनपोक्रिनोमे) से किया गया है जिसका अर्थ

है ''दिखावा'' या ''कपट'' के सम्बन्ध में ''भूमिका निभाने या बहाना बनाने में साथ'' देना।[28] यह शब्द यूनानी कलाकारों की ओर पीछे ले जाता है जो अलग अलग भूमिकाएं निभाने के लिए मुखौटे पहना करते थे।

यहूदी सामाजिक रीति के साथ मेल खाने के लिए दबाव इतना अधिक था कि **बरनबास भी उनके कपट में पड़ गया**। इस तथ्य ने कि पौलुस का अपना वफ़ादार सहकर्मी अन्यजातियों से अलग हो गया था, उसे स्तब्ध किया होगा और बेहद दुखी भी। आखिर बरनबास को प्रोत्साहन देने वाले (प्रेरितों 4:36) और मसीही लोगों का मिलान कराने वाले के रूप में जाना जाता था। जब बाकी सब लोग डरे हुए थे तब वह पौलुस (पूर्व सताने वाले) को प्रेरितों के पास लेकर आया था ताकि उसकी संगति यरूशलेम की कलीसिया के साथ हो सके (प्रेरितों 9:27)। इसके अलावा अंताकिया में सुसमाचार सुनाने में उसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और पौलुस को काम में साथ आने के लिए कहने तरसुस में वही गया था (प्रेरितों 11:22-26)। पौलुस को यह अजीब लगा कि अब बरनबास अन्यजातियों से अलग हो रहा है, जिनमें से कइयों को मसीह के पास वही लाया होगा। बरनबास ने इन मसीहियों से कभी पीछे न हटना था, यदि उसके यहूदी भाइयों ने उसे गलत नमूना न दिया होता।

आयत 14. पौलुस ने कहा कि ये लोग **सुसमाचार की सच्चाई पर सीधी चाल नहीं चलते**। यूनानी शब्द *orthopodeō* (ऑर्थोपोडियो) जिससे अग्रेजी शब्द ''ऑर्थोपेडिक'' निकला है, जिसका अर्थ मूल में ''सीधा चलना'' होता है। इसमें सही मार्ग पर चलने या सही लक्ष्य की ओर बढ़ने का विचार है। ''सुसमाचार की सच्चाई'' (2:5) कि यहूदी और मसीही लोग मसीह में एक हैं (3:28) को अपने कामों के द्वारा पतरस और अन्य यहूदी मसीहियों ने गलत ढंग से पेश किया था। जैसा कि लियोन मौरिस ने ध्यान दिलाया है, मेज की संगति से उनके पीछे हटने से ''अन्यजाति विश्वासियों को द्वितीय श्रेणी के मसीही बना दिया जो अब तक यही सोच रहे थे कि वे भी कलीसिया में किसी भी अन्य यहूदी विश्वासी की तरह ही हैं।''[29]

पौलुस ने **सब के सामने** इस मुद्दे पर पतरस से निर्भीक होकर बात की। कुछ मामले ऐसे होते हैं जिन पर एकांत में चर्चा की जानी आवश्यक होती है परन्तु यह एक ऐसा मुद्दा था जिस पर सब के सामने बात की जानी आवश्यक थी। जैसा कि 2:1-10 बार-बार कहा गया है, पौलुस अपने आपको कलीसिया के अन्य अगुवों से कम नहीं मानता था। पतरस चाहे मसीह का प्रेरित था परन्तु वह ऐसा नहीं था कि वह गलती न कर सके।

पौलुस ने पतरस से पूछा, **''जब तू यहूदी होकर अन्यजातियों के समान चलता है और यहूदियों के समान नहीं तो तू अन्यजातियों को यहूदियों के समान चलने को क्यों कहता है?''** पतरस ने असल में या जानबूझकर ''अन्यजातियों को यहूदियों के समान चलने'' को नहीं कहा था परन्तु उसके कामों ने उन्हें ऐसा करने के लिए प्रभावित किया था। मेज की संगति से पीछे हटकर लगा कि वह संकेत दे रहा लगता था कि अन्यजातियों को चाहिए कि वे खतना करवाएं और व्यवस्था को मानें ताकि वह उनके साथ खा सकें। पतरस ने ऐसा दिखाया हो सकता है कि उसका इरादा नहीं है कि अन्यजाति लोग यहूदी रीतियों को मानें। तौभी यहूदी मत की शिक्षा देने वालों का तो यही इरादा होगा और इसी के लिए वह अंताकिया में आए थे। पतरस का अन्यजातियों से पीछे हटना उन्हीं की योजना का हिस्सा था और पौलुस पतरस को इसके बारे में

चौकस करना चाहता था।[30]

2:14 में पौलुस के प्रश्न में दो मुख्य यूनानी शब्द मिलते हैं। पहला शब्द *anankazō* (अनैंकैज़ो) है जिसका अनुवाद "कहता है" हुआ है जिसे 2:3 में "विवश किया गया" अनुवाद किया गया है। उस आयत में पौलुस ने यह जोर दिया कि तीतुस को जो कि एक अन्यजाति मसीही था, यरूशलेम से अगुओं के आने पर जिनमें पतरस भी था "खतना कराने के लिए विवश नहीं किया गया।" यहां पतरस के पीछे हटने का असर यह हुआ कि वह "अन्यजातियों को यहूदियों के समान चलने को" यानी खतना कराने को विवश कर रहा था। विवश करने के लिए "कहता है" कपट को रेखांकित करता है। दूसरा शब्द *Ioudaizō* (लौडेज़ो) है जिसका अनुवाद "यहूदियों के समान" हुआ है। अंग्रेज़ी शब्द *Judaize* (जुडेआइज़) का आधार यही यूनानी शब्द है।[31] यहूदी मत की शिक्षा देने के बजाय यहूदी मसीहियों को यह समझना आवश्यक था कि व्यवस्था को मानना मसीही लोगों के लिए आवश्यक नहीं था और मसीह में अन्यजाति विश्वासियों के साथ उनकी एकता अधिक आवश्यक थी।

मसीह में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाना (2:15-21)

[15]हम तो जन्म के यहूदी हैं, और पापी अन्यजातियों में से नहीं। [16]तौभी यह जानकर कि मनुष्य व्यवस्था के कामों में नहीं, पर केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहराता है, हम ने आप भी मसीह यीशु पर विश्वास किया कि हम व्यवस्था के कामों से नहीं, पर मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरें; इसलिये कि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी न ठहरेगा। [17]हम जो मसीह में धर्मी ठहरना चाहते है, यदि आप ही पापी निकलें, तो क्या मसीह पाप का सेवक है ? कदापि नहीं! [18]क्योंकि जो कुछ मैं ने गिरा दिया यदि उसी को फिर बनाता हूं, तो अपने आप को अपराधी ठहराता हूं। [19]मैं तो व्यवस्था के द्वारा व्यवस्था के लिए मर गया कि परमेश्वर के लिए जीऊं। [20]मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है; और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को दे दिया। [21]मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराता; क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती, तो मसीह का मरना व्यर्थ होता।

NASB में शेष पूरे अध्याय में पौलुस को पतरस को सम्बोधित करते हुए दिखाया गया है (2:15-21)। जिस में पूरा वचन उद्धहरण चिह्नों में रखा गया है (देखें NIV; NKJV)। कई संस्करणों में 2:14 के अंत में (GNT; NJB; NRSV; REB; NCV; ESV) या 2:16 के अंत में (NLT) उद्धरण बंद कर दिए गए हैं। यह भाग चाहे खास तौर पर पौलुस की पतरस से बातचीत से सम्बन्धित है पर यह अंताकिया में रहने वाले यहूदी मसीहियों और पौलुस के गलातिया के श्रोताओं के लिए भी प्रासंगिक था।

आयत 15. पौलुस कहना जारी रखता है, **"हम तो जन्म के यहूदी हैं, और पापी अन्यजातियों में से नहीं।"** यूनानी भाषा में व्यक्तिवाचक सर्वनाम "हम" (*hēmeis,* हेमेस) मज़बूत ढंग से दिखाया गया है। पौलुस इन साथी "यहूदी" से जुड़ रहा था जो उसी की तरह

अब्राहम, इसहाक, और याकूब की संतान में से थे। "जन्म के" शब्द (*phusis,* फुसिस) "स्वाभाविक क्रम" या "स्वाभाविक स्थिति" हो सकता है। NRSV में कहा गया है, "हम जन्म से यहूदी हैं।" इन लोगों को परमेश्वर की वाचा के लोगों में पैदा होने का बड़ा लाभ था (देखें रोमियों 3:1, 2)।

यहूदी लोग होने के नाते वे "अन्यजातियों" से जिन्हें आम तौर पर "पापी" (*hamartōlos,* हमरटोलोस से) नाम दिया जाता था, अलग थे। अन्यजातियों को मर्यादाहीन माना जाता था जिनके पास व्यवस्था नहीं थी। असल में बहुत से अन्यजाति लोग अपनी मूर्तिपूजा, कामुक प्रवृति तथा अन्य भयंकर पापों के कारण परमेश्वर से दूर भटके हुए थे (रोमियों 1:18–32)। "पापी" शब्द भी यहूदी जाति के बीच उन लोगों के लिए लागू होता था जो व्यवस्था को नहीं मानते थे; प्रसिद्ध वाक्यांश "महसूल लेनेवालों और पापियों" में यह मिलता है (मत्ती 9:10, 11; 11:19; मरकुस 2:15, 16; लूका 5:30; 7:34; 15:1)।

आयत 16. पौलुस, पतरस और अन्य यहूदी मसीहियों को चाहे अन्यजातियों के ऊपर लाभ था पर उन्हें भी उद्धार की आवश्यकता थी। अपने गलातिया के अपने पाठकों के साथ, पौलुस ने इन्हें भी याद दिलाया **कि मनुष्य व्यवस्था के कामों में नहीं, पर केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहराता है**। यहूदी लोग पूरी तरह से व्यवस्था को नहीं मान पाते थे, इसलिए वे परमेश्वर के साथ अपने आपको सही नहीं कर सकते थे (रोमियों 7:7–25)। पौलुस ने इस विचार को बार-बार नकारा कि किसी का उद्धार व्यवस्था के कामों के द्वारा हो सकता है। यह तथ्य ही कि उन्होंने **मसीह यीशु पर विश्वास किया** दिखाता था कि वे **व्यवस्था के कामों से नहीं, पर मसीह पर विश्वास करने से धर्मी** ठहरे थे।

"धर्मी ठहरे" "व्यवस्था के कामों" और "मसीह में विश्वास" जैसे शब्दों को दोहराकर आयत 16 गलातियों की पुस्तक में मुख्य थियोलॉजिक वाक्य का काम करती है। परमेश्वर में उसके पक्के भरोसे और आज्ञा मानने का संकेत देते हुए, कुछ लोग यह तर्क देते हैं कि अंतिम वाक्यांश का अनुवाद "मसीह *का* विश्वास" (व्यक्ति परक सम्बन्धवाचक; देखें KJV)। मनुष्य का धर्मी ठहराया जाना निश्चय ही मसीह की वफ़ादारी पर निर्भर है (2 कुरिन्थियों 5:21) पर NASB तथा अन्य संस्करणों में "मसीह *में* विश्वास" (कर्म सम्बन्धकारक है)। मसीही व्यक्ति का "विश्वास" केवल बौद्धिक सहमति नहीं है बल्कि इसमें भरोसा और समर्पण भी है।

पौलुस ने भजन संहिता 143:2 का संकेत देते हुए अपनी बात पर और ज़ोर दिया: "**व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी न ठहरेगा।**" यह सम्बन्ध रोमियों 3:20 में और स्पष्ट दिखाई देता है: "व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा।" NASB में भजन संहिता 143:2 के इब्रानी धर्मशास्त्र का अनुवाद इस प्रकार है: "क्योंकि तेरी दृष्टि में कोई जीवित मनुष्य धर्मी नहीं है।"

पौलुस इस तथ्य को स्थापित कर रहा था कि यहूदियों और अन्यजातियों दोनों को धर्मी ठहराए जाने की आवश्यकता थी जो कि केवल मसीह में हो सकता है। इसलिए यहूदी मसीहियों के लिए अपने आपको अपने अन्यजाति प्रतिरूपों से डींग मारने या अलग होने का कोई कारण नहीं था।[32] प्रेरितों 15:9 कहता है कि पतरस ने यही तर्क यरूशलेम की सभा में दिया था जब उसने कहा था कि परमेश्वर ने "विश्वास के द्वारा उनके मन शुद्ध करके हम में और उन में कुछ

भेद न रखा।'' उसने यह भी कहा, ''हमारा यह तो निश्चय है कि जिस रीति से वे प्रभु यीशु के अनुग्रह से उद्धार पाएंगे; उसी रीति से हम भी पाएंगे'' (प्रेरितों 15:11)।

आयत 17. रोमियों के नाम अपने पत्र की तरह पौलुस ने यहां पर कल्पना की कि उसकी शिक्षा पर आपत्ति करने वाला कैसे जवाब दे सकता है। उसने पूछा, ''**हम जो मसीह में धर्मी ठहरना चाहते है, यदि आप ही पापी निकलें, तो क्या मसीह पाप का सेवक है?**'' अनुवादित शब्द ''सेवक'' यूनानी भाषा के (*diakonos*, डायाकोनोस) से लिया गया है जिसका अनुवाद कई बार ''मिनिस्टर'' या ''डीकन'' के रूप में किया जाता है। इस संदर्भ में इसका अर्थ ''सहायक'' या ''मददगार'' के लिए है। REB में प्रश्न का अंतिम भाग इस प्रकार है, ''क्या इसका अर्थ यह हुआ कि मसीह पाप को बढ़ावा देने वाला है?'' GNT में है, ''क्या इसका अर्थ है कि मसीह पाप की सेवा करता है?'' पौलुस ने इस सुझाव को बिल्कुल नकार दिया जब उसने चिल्लाकर कहा, ''**कदापि नहीं।**''

आयत 17 से दो महत्वपूर्ण विचार मिल सकते हैं। पहला, मसीह के द्वारा उद्धार पाने के लिए, यहूदियों के लिए इस सच्चाई का सामना करना आवश्यक था कि वे खुद ''पापी'' थे। यहां पर उसी यूनानी शब्द *hamartōlos* (हमरटोलोस) का इस्तेमाल किया गया है जो 2:15 में भी अन्यजातियों के लिए मिलता है। दोनों समूह पापी थे और उन्हें उद्धार की आवश्यकता थी (देखें रोमियों 1—3)।

दूसरा, जब पौलुस ने आज्ञाकारी विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार का प्रचार किया (बिना व्यवस्था के), तो यहूदी मत की शिक्षा देने वालों को यह लगा कि इससे तो अच्छे यहूदी पाप में चले जाएंगे और अन्यजातियों को पाप करने से रोका नहीं जा पाएगा। ऐसे ही एक तर्क का इस्तेमाल रोमियों 6:1, 2 में हुआ है, जो इस गलत धारणा का उत्तर देता है कि अनुग्रह का सुसमाचार पाप करने का लाइसेंस है: ''तो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें कि अनुग्रह बहुत हो? कदापि नहीं!'' बाद में गलातियों 5:13-26 में पौलुस ने अपने पाठकों के बीच लिब्रतिनियों से सीधे निपटा। उसने बताया कि ''जातीय बिगाड़ अधिक नियमों के लागू करने से नहीं बल्कि [लोगों के] जीवनों में आत्मा के निर्देश को स्वीकार किए जाने के द्वारा सुधारे जाते हैं।''[33]

आयत 18. पौलुस किसी समय व्यवस्था की आज्ञा मानने के द्वारा अपनी ही धार्मिकता को स्थापित करने की कोशिश करता था, परन्तु अब उसे जीवन के इस ढंग की व्यर्थता की समझ आ गई थी। मसीह के सुसमाचार की सामर्थ से पाप से छुड़ाए जाने के बाद अब उस पुराने सिस्टम में फिर से जाने की कोई इच्छा नहीं थी। उसने लिखा, ''**क्योंकि जो कुछ मैं ने गिरा दिया यदि उसी को फिर बनाता हूं, तो अपने आप को अपराधी ठहराता हूं।**'' सुसमाचार पापी लोगों के लिए प्रेम की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति है इसलिए मसीही होने के पहले के ढंगों को फिर से लागू करना पूरी तरह से मूर्खता का काम है। ''फिर बनाता हूं'' का अर्थ धार्मिकता के स्रोत के रूप में फिर से व्यवस्था की ओर जाना है। व्यवस्था पर निर्भर रहने से केवल मनुष्य की कमज़ोरी ही सामने आई, क्योंकि इसने दिखा दिया कि व्यक्ति ''अपराधी'' (*parabatēs*, पैराबेट्स) था। इस शब्द का जो कि शायद ''पापी'' शब्द से अधिक मज़बूत है अर्थ उस व्यक्ति के लिए है जिसने व्यवस्था की सीमाओं को पार किया या उनका उल्लंघन किया है। व्यवस्था के आधार पर धार्मिकता के लिए सुसमाचार को नकारने से केवल नाकामी ही मिलती है क्योंकि यह व्यक्ति

को परमेश्वर के दण्ड के अधीन ले आता है।

आयत 19. प्रेरित ने आगे कहा, **''मैं तो व्यवस्था के द्वारा व्यवस्था के लिए मर गया कि परमेश्वर के लिए जीऊं।''** व्यवस्था के द्वारा पाप और मृत्यु आए थे (1 कुरिन्थियों 15:56), इसलिए पौलुस मसीही मनपरिवर्तन को व्यवस्था (रोमियों 7:4-6) *और* पाप के लिए (रोमियों 6:2) मर जाना कह पाया। बेशक व्यवस्था के लिए मरने का विचार यहूदी मसीहियों पर अधिक लागू होता था जो किसी समय व्यवस्था के अधीन रहा करते थे। ब्रूस ने इसे इस प्रकार से कहा है: ''यदि उनके लिए व्यवस्था के लिए मर जाने के बाद, अपने आपको फिर से व्यवस्था के अधीन करना असंगत था तो गलातियों जैसे अन्यजाति मसीहियों के लिए व्यवस्था के जुए को मान लेना और भी असंगत था जिसके लिए उनके पूर्वजों की कोई वचनबद्धता नहीं थी।''[34]

आयत 20. किसी समय व्यवस्था पौलुस के दिलो दिमाग पर छाई हुई थी। जब वह यरूशलेम में रब्बी बनने के लिए एक होनहार छात्र था। परन्तु अब उसकी जगह यीशु मसीह के प्रति उसके समर्पण ने ले ली थी (फिलिप्पियों 1:21; 3:7-11)। व्यवस्था के जुए से छुड़ाए जाकर पौलुस को यीशु मसीह के साथ अपनी पहचान के द्वारा पवित्र जीवन जीने की प्रेरणा मिली थी। उसने लिखा, **''मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं।''**

पौलुस दमिश्क में मसीह में अपने मनपरिवर्तन की कहानी की ओर ध्यान दिला रहा था। मार्ग में मिले दर्शन में उसे यीशु द्वारा दिखाई देने के बाद, पौलुस को नगर में ले जाया गया था, जहां वह तीन दिन तक अंधा रहा था। उस अवधि के अंत में, हनन्याह ने उसे निर्देश दिया था, ''उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल'' (प्रेरितों 22:16)। उसे ''मसीह यीशु में बपतिस्मा'' और ''उसकी मृत्यु में बपतिस्मा'' दिया गया था, जैसा कि बाद में उसने बताया कि बपतिस्मा किसमें होता है (रोमियों 6:3; देखें 2:12-14)। अन्य शब्दों मैं पौलुस के मसीह में डुबकी लेने पर, वह मसीह की मृत्यु में उसके साथ मिल गया था। यीशु मनुष्य को क्षमा दिलाने के लिए मरा था (मत्ती 26:28) और बपतिस्मे की पानी रूपी कब्र में पौलुस ने अपने पापों से मरकर मसीह की मृत्यु के लाभों को प्राप्त किया था। वहां पर जीवन का उसका पूरा नज़रिया ही बदल गया। अपने फरीसी होने के गर्व को पीछे छोड़ते हुए उसने जीवन के विनम्र ढंग को अपना लिया था जो यीशु को क्रूस तक ले गया; उसके इरादे और लक्ष्य पूरी तरह से बदल गए। यीशु की तरह ही वह जान गया था कि ''तेरी इच्छा पूरी हो'' का अर्थ क्या होता है (देखें मत्ती 6:10; 26:42)। उसने अपना जीवन पूरी तरह से यीशु परमेश्वर को दे दिया।[35]

पाप के लिए पौलुस की मृत्यु केवल बीते समय की घटना नहीं थी बल्कि यह तो अपने आपका इनकार करने का उसका प्रतिदिन का व्यवहार था।[36] अब पौलुस की सोच और पसंद पर यीशु मसीह का कब्जा था। उसने कहा, **''अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है।''** यूनानी धर्मशास्त्र में शब्दों का क्रम व्यक्ति पर ज़ोर देता है। ''और अब जीवित न रहा *मैं,* परन्तु मुझ में जीवित है *मसीह*।'' मसीह पौलुस में जीवित था वैसे ही जैसे पवित्र आत्मा वास करता है (रोमियों 5:5; 8:9-11, 23; 2 कुरिन्थियों 13:5; इफिसियों 3:17; कुलुस्सियों 1:27)।

पौलुस जो **जीवित** था वह **शरीर में** (उसकी नश्वर देह) जीवित था, उसका यह जीवन **उस विश्वास से** था **जो परमेश्वर के पुत्र पर है** (देखें 2 कुरिन्थियों 5:7)। अब उसका अपनी खुद की धार्मिकता पर भरोसा नहीं था बल्कि यीशु मसीह की धार्मिकता पर भरोसा था। प्रेरित

का मसीह के बलिदान का विचार अत्याधिक व्यक्तिगत था। उसने यीशु को वह बताया **जिस ने *मुझ* से प्रेम किया और *मेरे* लिए अपने आप को दे दिया**। उसे यह समझ आ गया कि यीशु सारे संसार के लिए मरा था (1 तीमुथियुस 2:6); इसके बावजूद उसने यीशु को अपने निजी उद्धारकर्त्ता के रूप में देखा। मसीह स्वेच्छा से *उसके लिए* क्रूस पर मरा था।

आयत 21. पौलुस ने यीशु मसीह में दिखाए गए **परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं** ठहराया या बेकार नहीं जाने दिया। "व्यर्थ" (*atheteō*, अथेटो) शब्द जो कि 3:15 में दोबारा मिलता है, वाचाओं और वसीयतों के क्षेत्र से लिया गया एक कानूनी शब्द है।[37] पौलुस ने व्यवस्था की दासता में वापिस जाकर मसीह में अपने उद्धार को खोना नहीं था (देखें 5:4)।

प्रेरित ने ज़ोर दिया कि **यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती, तो मसीह का मरना व्यर्थ होता** ("का बिना उद्देश्य"; ESV)। यह वाक्य यहूदी मत की शिक्षा देने के दृष्टिकोण के बेतुकेपन को दिखाता है। परमेश्वर के सामने धर्मी होना केवल मसीह के द्वारा पाया जा सकता है (3:10-14; रोमियों 3:21-26)।

अतिरिक्त अध्ययन के लिए: गलातियों 2:1 में यरूशलेम जाना प्रेरितों के काम में किस यात्रा की बात है?

गलातियों 2:1-10 में पौलुस के यरूशलेम में कलीसिया के दिग्गजों से मिलने जाने के सम्बन्ध में घटनाओं के सिलसिलेवार होने की चर्चा करते हुए इन उपयोगी बातों पर विचार किया जाना चाहिए:

1. लूका ने उन घटनाओं का जिन्हें वह "क्रमानुसार" (लूका 1:3) या "आरम्भ से क्रमानुसार" (प्रेरितों 11:4) लिख रहा था, घटनाएं बताने का दावा किया। इन संदर्भों में इस्तेमाल किया गया शब्द *kathexēs* (कैथेक्सस) है, जिसका अर्थ है "समय, स्थान या तर्क में क्रम में होना, *क्रमबद्ध, एक के बाद एक*।[38]

2. गलातियों 1 और 2 में पौलुस अपनी प्रेरिताई का, विशेषकर दूसरे प्रेरितों से स्वतन्त्र रूप में उसे सुसमाचार मिलने के सम्बन्ध में बचाव कर रहा था। वास्तव में यही एकमात्र वह कारण था जो 1:18, 19 और 2:1-10 में उसके यरूशलेम में आने का कारण बना।

3. लूका को प्रेरितों के काम में पौलुस की प्रेरिताई की हर बात बताने का जिम्मा नहीं था। उसने स्पष्टतया मसीही मूवमेंट के प्रारम्भ और उसके बढ़ने का सामान्य विवरण दिया। चाहे यह स्पष्ट है कि लूका पतरस के बजाय पौलुस के अधिक करीब था, उसके लिए प्रेरितों के काम में पतरस के बारे में किसी भी प्रकार की कोई अपमानजनक बात लिखने का कोई कारण नहीं लगता। आखिर पतरस कलीसिया के आरम्भ में एक प्रमुख व्यक्ति था।

4. पौलुस के लिए स्थिति बिल्कुल अलग थी। उसकी प्रेरिताई को एक ओर जहां गौण या घटिया कहकर उस पर आक्रमण किया जा रहा था, वहीं पतरस के साथ बराबर होने (2:6-9) और अंताकिया में पतरस का सामना (2:11-21) के रूप में उसकी स्वीकृति उसके तर्क के लिए उपयुक्त थी।

5. लूका पौलुस के मनपरिवर्तन के बाद यरूशलेम कई बार जाने के बारे में लिखता है।

उसके यह दौरे जो चर्चा के लिए प्रासंगिक है इस प्रकार हैं:

प्रेरितों 9:26-29 में पौलुस यरूशलेम में गया, जहां बरनबास के द्वारा उसे प्रेरितों (मुख्यतया पतरस) से परिचित करवाया गया। यह मुलाकात दश्मिक में पौलुस के मनपरिवर्तन के तीन साल बाद हुई थी (गलातियों 1:18, 19)।

प्रेरितों 11:29, 30 और 12:25 में, पौलुस और बरनबास ने यरूशलेम के प्राचीनों के पास अकाल राहत के लिए अंताकिया की ओर से आर्थिक सहायता पहुंचाई थी। लूका के विवरण में, यह पौलुस का दूसरी बार यरूशलेम जाना था। क्या पौलुस ने इस यात्रा को छोड़ दिया, या यह गलातियों 2:1-10 वाली यात्रा हो सकती है, जो "प्रकाशन" के उत्तर में की गई थी? (2:2 पर टिप्पणियां देखें।)

प्रेरितों 15 में, पौलुस और बरनबास खतने और व्यवस्था को मानने के सम्बन्ध में होने वाली सभा में भाग लेने यरूशलेम गए। उन्हें भाइयों द्वारा जाने के लिए ठहराया गया होगा (प्रेरितों 15:2),[39] परन्तु वह वचन प्रकाशन के बारे में कुछ नहीं कहता।

प्रांसगिकता

बरनबास का स्वभाव, भाग 1 (2:1-10, 13)

बरनबास को पौलुस के हमसफर के रूप में याद किया जाता है, परन्तु आम तौर पर उस पर इतना ध्यान नहीं दिया जाता। उन सकारात्मक गुणों पर विचार करें जो उसमें पाए जाते थे जिससे हमें प्रभु के साथ और नज़दीकी से चलने की प्रेरणा मिल सकती है।

वह "शांति का पुत्र" था। उसका असल नाम यूसुफ था, परन्तु प्रेरितों ने उसे "बरनबास" नाम दे दिया था जिसका अर्थ है "शांति का पुत्र" (प्रेरितों 4:36)। यूनानी शब्द (*paraklēsis,* पैराक्लेसिस) जिसका अनुवाद "शांति" हुआ है, इसे "प्रोत्साहन" (NASB) या "उपदेश" (NEB) भी हो सकता है। प्रारम्भिक कलीसिया के ऐतिहासिक विवरण में लूका ने इस व्यक्ति को चुना, जिसमें शांति, प्रोत्साहन और उपदेश देने के गुण थे। स्पष्टतया उसमें ऐसा तो कुछ था जिससे उसकी आत्मिकता के सम्बन्ध में प्रेरित बड़े ही प्रभावित थे।

"का पुत्र" की अभिव्यक्ति एक यहूदी मुहावरा था जो बेहद गम्भीर लगता है। यह तो ऐसा है जैसे कोई चीज़ (यहां पर "शांति") से जन्मा हो और उसमें उसी का स्वभाव हो। नये नियम में इस अभिव्यक्ति के और उदाहरणों में "आज्ञा न मानने वाले" (इफिसियों 2:2), "नारकीय" (मत्ती 23:15), "गर्जन के पुत्र" (मरकुस 3:17), "ज्योति के लोगों" (लूका 16:8) और "पुनरुत्थान की संतान" (लूका 20:36) आते हैं। बरनबास का स्वभाव ही दूसरों को प्रभु के पीछे चलने के लिए प्रोत्साहित करने वाला था; वह दूसरों को गिराने के बजाय बना रहा था।

वह उदार था (प्रेरितों 4:37)। दूसरों के लिए बरनबास की चिंता कलीसिया के लिए उसके उदार योगदान से स्पष्ट है। लूका ने लिखा कि "उसकी कुछ भूमि थी, जिसे उसने बेचा, और दाम के रुपये लाकर प्रेरितों के पांवों पर रख दिए" (प्रेरितों 4:37)। बरनबास उस उदारता का शानदार उदाहरण है जिसने प्रारम्भिक कलीसिया को उस प्रकाश को चमकाने की प्रेरणा और उत्साह देने

का काम किया जिसकी बात यीशु ने की थी। लोग उनके भले कामों को देखकर "[पिता की] जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई" करने के अलावा और कुछ नहीं कर सकते थे (मत्ती 5:16)।

बरनबास अपनी उदारता के लिए जाना जाता था जो इसके विपरीत यानी लोभ या लालच के पाप के बिल्कुल उलट है। कुलुस्सियों 3:5 में पौलुस ने "लालच" को पापों की श्रेणी में रखा जो पाप में गिरी मनुष्यजाति में आम हैं, जिनसे मसीही लोगों को मरना आवश्यक है। उसने इस लोभ को "मूर्तिपूजा" से मिलाया। धन की इच्छा जीवन में महत्वपूर्ण लक्ष्य और सुरक्षा का आधार बनकर उस बुनियादी विश्वास को ही छीन सकती है जो केवल और केवल परमेश्वर का है। किसी और जगह पौलुस ने चेतावनी दी कि "जो धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा, और फंदे और बहुतेरे व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फंसते हैं, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं और विनाश के समुद्र में डुबा देती हैं" (1 तीमुथियुस 6:9)। बरनबास ऐसा व्यक्ति नहीं था। इसके विपरीत वह उदारता का नमूना था।

वह साहसी था। बरनबास एक साहसी व्यक्ति था जो कि तरसुसवासी शाऊल के पूरे मनपरिवर्तन के बाद उसके साथ मेल-जोल से देखा जा सकता है। दमिश्क में मुश्किल से मरने से बचने के बाद शाऊल ने यरूशलेम के पवित्र लोगों के साथ मिलने के असफल प्रयास किए थे।

> यरूशलेम में पहुंचकर उसने चेलों के साथ मिल जाने का प्रयत्न किया; परन्तु सब उससे डरते थे, क्योंकि उनको विश्वास न होता था, कि वह भी चेला है। परन्तु बरनबास ने उसे अपने साथ प्रेरितों के पास ले जाकर उनको बताया कि इसने किस रीति से मार्ग में प्रभु को देखा, और उसने इससे बातें कीं; फिर दमिश्क में इसने कैसे हियाव से यीशु के नाम से प्रचार किया (प्रेरितों 9:26, 27)।

हमें उन परिस्थितियों के बारे में सीधे नहीं बताया गया जिनमें बरनबास शाऊल से पहली बार मिला था। हमें बस इतना बताया गया है कि बाकी सब उसके पास आने से डरते थे। यही इस बात की गवाही है कि बरनबास एक साहसी व्यक्ति था। दूसरों का शाऊल से डरना बेवजह नहीं था। अध्याय के आरम्भ में बताया गया है कि वह "अब तक प्रभु के चेलों को धमकाने और घात करने की धुन में था, महायाजक के पास गया" (प्रेरितों 9:1)। उद्धार की बातें बताने के लिए शाऊल के पास जाने की आज्ञा मिलने के समय हनन्याह का उत्तर भी कथित भय की पुष्टि करता है (प्रेरितों 9:13, 14)। आखिर शाऊल ने मसीही लोगों को कैद किया था, मत दिया था कि उन्हें मृत्युदण्ड दिया जाए, उन्हें विदेशी नगरों में ढूंढ़ने जाता था और यीशु के नाम की निंदा करने के लिए विवश करने की कोशिश करता था (प्रेरितों 26:9-11)।

बेशक बरनबास के लिए यह जोखिम लेने के लिए बड़े साहस की आवश्यकता थी। उसने न केवल साहस दिखाया बल्कि उस नाम के साथ जो प्रेरितों ने उसे दिया था "शांति का पुत्र" जिया भी। पौलुस अब यहूदियों की नज़र में गद्दार था और प्रभु के चेले भी उससे किनारा करते थे। वह अपने आप में अकेला महसूस करता होगा और प्रोत्साहन या शांति की आवश्यकता लगती होगी जो यरूशलेम की कलीसिया के साथ उसका सम्पर्क करवाकर बरबनास ने उसे दी।

वह भरोसे के योग्य था। यरूशलेम की कलीसिया पर सताव के कारण मसीही लोग फलिस्तीन तथा उसके बाहर के अन्य भागों में तितर बितर हो गए। वह जहां भी गए, दूसरों को

मसीह का सुसमाचार सुनाते रहे। कुरनेलियुस के घराने में अन्यजातियों के पहले मनपरिवर्तन के बाद "उनमें से कितने साइप्रसवासी और कुरेनी थे, जो अन्ताकिया में आकर यूनानियों को भी यीशु के सुसमाचार की बातें सुनाने लगे।" जिसका परिणाम यह हुआ कि "प्रभु का हाथ उन पर था, और बहुत लोग विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे" (प्रेरितों 11:20, 21)।

जब यरूशलेम की कलीसिया ने उन बहुत से लोगों के बारे में सुना जो मसीह में विश्वास लाए थे उन्होंने बरनबास को अंताकिया में भेजा (प्रेरितों 11:22)। नि:संदेह उन्होंने उसे इसलिए चुना क्योंकि वह भरोसे के योग्य था। स्पष्टतया वह यरूशलेम की कलीसिया के आंख और कान बनकर पूरा अधिकार देकर भेजा गया था। जहां तक वचन बताता है अंताकिया की स्थिति के उसके आकलन की पुष्टि करने के लिए किसी और को नहीं भेजा गया। और तो और वह वहां की स्थिति के बारे में ज़बानी तौर पर बताने के लिए यरूशलेम में भी नहीं लौटा। यरूशलेम की कलीसिया के अगुओं को भरोसा था कि बरनबास स्थिति का सही आकलन करके उसी के अनुसार। "वह वहां पहुंचकर और परमेश्वर के अनुग्रह को देखकर आनन्दित हुआ, और सब को उपदेश दिया कि तन मन लगाकर प्रभु से लिपटे रहो" (प्रेरितों 11:23)।[40]

बरनबास का स्वभाव, भाग 2 (2:1-10, 13)

अन्यजातियों के प्रेरित का प्रभाव चाहे अधिक था, परन्तु बरनबास अपने अधिकार में एक अनोखा मसीही था। उसके स्वभाव की कुछ बातों पर विचार करें।

वह "एक भला मनुष्य" था। अपने विवरण को जारी रखते हुए लूका ने अपने बरनबास का वर्णन "एक भला मनुष्य" के रूप में किया (प्रेरितों 11:24)। हमारे लिए चाहे किसी को "भला मनुष्य" कहना आम बात है पर वचन में यह आम नहीं है। नये नियम में बरनबास और अरिमतिया का यूसुफ (लूका 23:50) भी वह चेले हैं जिन्हें व्यक्तिगत रूप में विशेषण शब्द "भला" (*agathos*, अगथोस) कहकर उनका वर्णन किया गया है। गलातियों के पत्र में इस शब्द का संज्ञा रूप "भलाई" आत्मा के फल के रूप में दिया गया है (5:22)।

वह "पवित्र आत्मा और विश्वास से परिपूर्ण" था। "एक भला मनुष्य" होने के अलावा बरनबास को "पवित्र आत्मा और विश्वास से परिपूर्ण" भी बताया गया है (प्रेरितों 11:24)। बरनबास के जीवन में आत्मा की गतिविधि को प्रेरितों 4 में पीछे देखा जा सकता है। उस समय जब प्रारम्भिक कलीसिया यहूदी अधिकारियों के विरोध से नष्ट होने के जोखिम में थी, पवित्र आत्मा ने चेलों की प्रार्थना के उत्तर में जबर्दस्त ढंग से हस्तक्षेप किया: "जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहां वे इकट्ठे थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे" (प्रेरितों 4:31)। परन्तु आत्मा का काम शक्तिशाली ढंग से तो था ही पर चेलों की जबानी गवाही से बहुत आगे था क्योंकि मण्डली में भी आत्मा की एकता और उदारता थी (प्रेरितों 4:32-35)। यहां पर हमारा परिचय बरनबास से अर्थात "शांति का पुत्र" से करवाया जाता है जिसने अपनी सम्पत्ति बेचकर उससे मिलने वाला धन कलीसिया को दान कर दिया। निश्चय ही उसके पास देने और उपदेश के आत्मिक दान थे (रोमियों 12:8)। इसके अलावा बरनबास का नाम बाद में अंताकिया के "भविष्यवक्ता और उपदेशक" वाली सूची में मिलता है (प्रेरितों 13:1); भविष्यवाणी करना और शिक्षा देना भी आत्मा के दान थे (रोमियों

12:6, 7; 1 कुरिन्थियों 12:10, 29)।

वह सुसमाचार सुनाने वाला व्यक्ति था। बरनबास के अंताकिया में पहुंचने और वहां की कलीसिया को प्रोत्साहन देने के बाद वचन कहता है कि "अन्य बहुत से लोग प्रभु में आ मिले" (प्रेरितों 11:24)। फिर बरनबास शाऊल को ढूंढ़ने के लिए तरसुस चला गया। वह उसे अंताकिया में वापस लाया, जहां दोनों जन "एक वर्ष तक" सिखाने की महान सेवकाई में लगे रहे। इसी समय के दौरान "चेले सबसे पहले मसीही कहलाए" (प्रेरितों 11:25, 26)।

सुसमाचार सुनाने की बड़ी ज़िम्मेदारियों तथा विश्वास में नये नये इन अन्यजाति परिवर्तितों को मज़बूत करने के लिए सहकर्मी के रूप में शाऊल का चुनाव करने में बरनबास का निर्णय लेने की सूझ-बूझ का पता चला। मसीह के सुसमाचार के गहरे भेदों का प्रचार करने के लिए विशेष बुलाहट तथा ईश्वरीय प्रेरणा के साथ साथ इस्राएल के विश्वास की विद्वतापूर्ण प्रशिक्षण वाली विलक्षण पृष्ठभूमि शाऊल में थी। बरनबास को इससे बेहतर योग्य व्यक्ति और कहां मिल सकता था?

वह विनम्र था। बाद में जब पौलुस दोनों में से प्रमुख बन गया, तो यह भूल जाना आसान है कि सुसमाचार में अपने बड़े काम में अपने साथी के रूप में पौलुस की बेमिसाल क्षमता को पहचानकर उसे चुना, बरनबास ने ही था न कि किसी और ने। तौभी बरनबास ने गलातिया में कलीसियाएं स्थापित करते हुए पहली मिशनरी यात्रा पर पौलुस के साथ खुशी से काम किया। जब दोनों में काफ़ी झगड़ा हुआ तो इसमें कोई अहम की बात नहीं थी। बल्कि बरनबास ने यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है, जो पहली यात्रा पर वापस चला गया था (प्रेरितों 13:13) एक और मौका देना चाहा। परन्तु पौलुस उसको दूसरी यात्रा पर साथ नहीं ले जाना चाहता था। जिस कारण दोनों अलग अलग हो गए परन्तु मसीह के लिए काम करते रहे (प्रेरितों 15:36-41)।

प्रेरितों की और यीशु की गवाही (2:7, 8)

प्रेरितों को यह अच्छी तरह से पता था कि उन्हें सुसमाचार के मुख्य गवाह होने की विशेष भूमिका में सेवा के लिए परमेश्वर द्वारा चुना गया था (देखें लूका 24:44-49)। यीशु ने उन्हें आत्मा के आने के बारे में साफ़-साफ़ बता दिया था: वह "आने वाली बातें तुम्हें बताएगा" (यूहन्ना 16:13)। "ऊपर से सामर्थ" (लूका 24:49; देखें प्रेरितों 1:1-5) और आत्मा के बपतिस्मे (प्रेरितों 2:1-13) की प्रतिज्ञा के आने से एक आश्चर्यजनक ढंग से प्रभावशाली बदलाव हुआ। अब वह अनिश्चय और संदेह में रहने वाले दुबके हुए लोग नहीं थे बल्कि निडरता के साथ उन्होंने यहूदी भीड़ का सामना किया। प्रेरितों ने उन्हें यीशु को यानी अपने चिर प्रतीक्षित मसीहा को क्रूस पर चढ़ाने का दोष लगाया और मन फिराव और पापों की क्षमा और पवित्र आत्मा के दान की बाकी कहानी बताने लगे (प्रेरितों 2:14-40)। ऐसी सामर्थ जो केवल शब्दों की नहीं बल्कि चमत्कारी चिह्नों तथा अचम्भों की भी थी, इतनी स्पष्ट थी कि पिन्तेकुस्त के दिन परमेश्वर की कलीसिया इन दीन हीन से गलीलियों द्वारा आरम्भ की गई जिसके अधिकारिक सदस्यों की संख्या तीन हज़ार आत्माओं के लगभग हो गई (प्रेरितों 2:41-47)।

इस उद्धार की गवाही देना जारी रखते हुए प्रेरितों ने इस काम के बड़े सम्मान पर ज़ोर दिया जो उन्हें सौंपा गया था। पतरस ने यहूदी महासभा पर यह कहते हुए आरोप लगाया:

> हमारे बापदादों के परमेश्वर ने यीशु को जिलाया, जिसे तुम ने क्रूस पर लटकाकर मार डाला था। उसी को परमेश्वर ने प्रभु और उद्धारकर्ता ठहराकर, अपने दाहिने हाथ पर उच्च कर दिया, कि वह इस्राएलियों को मन फिराव की शक्ति और पापों की क्षमा प्रदान करे। हम इन बातों के गवाह हैं और वैसे ही पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है जो उसकी आज्ञा मानते हैं (प्रेरितों 5:30-32)।

कुरनेलियुस के घर में पतरस यीशु की सेवकाई को संक्षेप में दोहराया:

> हम उन सब कामों के गवाह हैं; जो उसने यहूदिया के देश और यरूशलेम में भी किए, और उन्होंने उसे काठ पर लटकाकर मार डाला। उसको परमेश्वर ने तीसरे दिन जिलाया, और प्रगट भी कर दिया है; सब लोगों पर नहीं वरन् उन गवाहों को जिन्हें परमेश्वर ने पहले से चुन लिया था, अर्थात् हम पर जिन्होंने उसके मरे हुओं में से जी उठने के बाद उसके साथ खाया-पीया; और उसने हमें आज्ञा दी कि लोगों में प्रचार करो और गवाही दो, कि यह वही है जिसे परमेश्वर ने जीवतों और मरे हुओं का न्यायी ठहराया है (प्रेरितों 10:39-42)।

पिसिदिया के अंताकिया में भी पौलुस की गवाही भी बड़ी दिलेरी के साथ दी गई (प्रेरितों 13:29-32)।

पतरस के पहले पत्र की एक झलक गवाह के रूप में उसकी भूमिका को रेखांकित करती है: "तुम में जो प्राचीन हैं मैं उनकी नाईं प्राचीन और मसीह के दुखों का गवाह और प्रकट होने वाली महिमा में सहभागी होकर उन्हें यह समझाता हूं" (1 पतरस 5:1)। अपनी दूसरी पत्री में पतरस ने विस्तार से अपनी गवाही दी:

> क्योंकि जब हमने तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ का, और आगमन का समाचार दिया था तो वह चतुराई से गढ़ी हुई कहानियों का अनुकरण नहीं किया था वरन हमने आप ही उसके प्रताप को देखा था। कि उसने परमेश्वर पिता से आदर, और महिमा पाई जब उस प्रतापमय महिमा में से यह वाणी आई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं। और जब हम उसके साथ पवित्र पहाड़ पर थे, तो स्वर्ग से यह वाणी आते सुनी। और हमारे पास जो भविष्यवक्ताओं का वचन है, वह इस घटना से दृढ़ ठहरा और तुम यह अच्छा करते हो जो यह समझकर उस पर ध्यान करते हो, कि वह एक दीया है, जो अन्धियारे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है जब तक कि पौ न फटे, और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे (2 पतरस 1:16-19)।

पतरस ने उस संदेश को जो दिया गया था याद दिलाते हुए अपने पत्रों को खत्म किया:

> हे प्रियो, अब मैं तुम्हें यह दूसरी पत्री लिखता हूं, और दोनों में सुधि दिलाकर तुम्हारे शुद्ध मन को उभारता हूं। कि तुम उन बातों को, जो पवित्र भविष्यवक्ताओं ने पहले से कही हैं और प्रभु, और उद्धारकर्त्ता की उस आज्ञा को स्मरण करो, जो तुम्हारे प्रेरितों के द्वारा दी गई थी (2 पतरस 3:1, 2)।

यह कुछ हवाले निश्चित रूप में पूरी सूची नहीं हैं। इसके विपरीत वे गवाही से सम्बन्धित ऐसे शब्दों का बहुत ही सीमित चुनाव दिखाते हैं जो मुख्यतया केवल एक प्रेरित से मिला है। ''गवाह'' और ''गवाही'' जैसे शब्द अदालत की भाषा से निकले हैं, जहां पर केसों को परखा जाता और गवाहों को प्रमाण देने के लिए बुलाया जाता है ताकि फैसला देकर न्याय सुनाया जा सके। हमारा परमेश्वर व्यवस्था देने वाला परमेश्वर है। धर्मी ठहराए जाने का हमारा सिस्टम चाहे विश्वास (यकीन, या भरोसा) के द्वारा अनुग्रह पर आधारित है जैसा कि पौलुस ने पुष्टि की है, ''क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के साम्हने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला जो उस ने देह के द्वारा किया हों पाए'' (2 कुरिन्थियों 5:10)।[41] बेशक यह विरोधाभासी लग सकता है पर यह नये नियम की एकसमान शिक्षा है कि हमें धर्मी चाहे विश्वास से ठहराया जाता है पर हमारा न्याय हमारे कामों के अनुसार होगा।[42]

कई हवालों में (प्रकाशितवाक्य 1:2, 9; 12:17; 19:10) हमें, ''यीशु की गवाही'' के हवाले मिलते हैं, जिसका अर्थ यीशु ''से सम्बन्धित'' या ''के बारे में'' संदेश है (वस्तु पर कारक)। यह ''गवाही'' सुसमाचार के लिए एक और शब्द है (देखें 2 तीमुथियुस 1:8-10; प्रकाशितवाक्य 6:9)। यीशु ने स्वयं ''पुन्तियुस पीलातुस के सामने अच्छा अंगीकार किया, यह आज्ञा देता हूं'' (1 तीमुथियुस 6:13)। एक तरफ जहां यह हो सकता है कि कुछ आयतें ''यीशु की गवाही'' उसके द्वारा किसी समय में कही गई बातें हों,[43] वचन फिर भी हमें वही तथ्य देता है कि यीशु ही मसीह, यानी मसीहा, यहूदियों का राजा है जिसने संसार के उद्धार के लिए छुटकारे के रूप में अपना प्राण दे दिया।

''मसीह का भेद'' (2:11-21)

उस शांति का सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक जिससे परमेश्वर मसीह के द्वारा संसार में लेकर आया, यह पहले छुपा हुआ तथ्य यह है कि उसके चुने हुए लोगों यानी इस्राएल से अन्य सब जातियों का पुराना अलगाव, अब मसीह में मिटा दिया गया है। पौलुस ने यहूदी और अन्यजाति के बीच इस बिल्कुल नई स्थिति को ''मसीह का भेद'' नाम दिया। नये नियम में और बहुत से ''भेद'' मिलते हैं,[44] पर यह भेद इतना महत्वपूर्ण कि पौलुस ने इसे काफ़ी जगह दी, खासकर इफिसियों के नाम अपने पत्र में:

> जिस से तुम पढ़कर जान सकते हो, कि मैं मसीह का वह भेद कहां तक समझता हूं। जो और और समयों में मनुष्यों की सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था, जैसा कि आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं पर प्रकट किया गया है। अर्थात यह, कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा अन्यजातीय लोग मीरास में साझी, और एक ही देह के और प्रतिज्ञा के भागी हैं। और मैं परमेश्वर के अनुग्रह के उस दान के अनुसार, जो उसकी सामर्थ के प्रभाव के अनुसार मुझे दिया गया, उस सुसमाचार का सेवक बना। मुझ पर जो सब पवित्र लोगों में से छोटे से भी छोटा हूं, यह अनुग्रह हुआ, कि मैं अन्यजातियों को मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार सुनाऊं। और सब पर यह बात प्रकाशित करूं, कि उस भेद का प्रबन्ध क्या है, जो सब के सृजनहार परमेश्वर में आदि से गुप्त था। ताकि

> अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में है प्रगट किया जाए। उस सनातन मनसा के अनुसार, जो उस ने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी (इफिसियों 3:4-11)।

इस वचन में मुख्य विचार यह है कि 1,500 वर्षों में जब परमेश्वर सीनै पर्वत से वाचा के अधीन इस्राएलियों से व्यवहार कर रहा था, जैसा कि उन्हें लगता था, असल में उसका पूरा फोकस वे नहीं थे। वे ज्वलंत उदाहरण जैसे थे जो उस "भेद" का हिस्सा थे जो समय के प्रारम्भ से परमेश्वर के मन में था। इफिसियों 3 के संदर्भ में एक जमाने की छिपी हुई सच्चाई यह है कि मसीह ने खोए हुए सारे संसार यानी सब जातियों (*ta ethnē,* ता एथने "अन्यजातियों") का उद्धारकर्त्ता बनना था। इस्राएलियों में पाए जाने वाले विश्वास के बिल्कुल उलट परमेश्वर ने केवल उन्हीं से प्रेम नहीं किया। उसने अपने उद्देश्य के लिए उन्हें चुना अवश्य; परन्तु जैसा कि यीशु द्वारा प्रकट किया गया उसका प्रेम "सारे संसार" के लिए था (यूहन्ना 3:16)।

परमेश्वर के साथ वाचा के इस्राएलियों के विशेष सम्बन्ध के समय के दौरान (निर्गमन 19:1-6), उन्हें अन्यजातियों के साथ हर प्रकार के सम्बन्धों से अपने आपको दूर रखना आवश्यक था। उन्हें परमेश्वर की निज प्रजा, पवित्र लोगों के रूप में उसके लिए अलग होने के लिए विशेष लोग और "जातियों के लिए प्रकाश" बनने के लिए बुलाया गया था (यशायाह 42:6)। अन्य लोगों से उन्हें अलग बनाने के लिए परमेश्वर ने इस्राएलियों को जो दिया था वह व्यवस्था थी जिसने उन्हें अपने आपको अलग करने की आज्ञा दी थी। अपने स्वभाव से ही, चाहे कई प्रकार से उनके लिए आशीष का काम किया (देखें रोमियों 3:1, 2), परन्तु व्यवस्था यहूदियों और अन्यजातियों के बीच शत्रुता का कारण थी। जब पौलुस ने और अन्य प्रेरितों ने यह प्रचार किया कि सुसमाचार सब जातियों के लिए है तो यहूदियों ने क्रोध के साथ प्रतिक्रिया दी, यहां तक कि हत्या भी करने पर उतारू हो गये (प्रेरितों 22:20-23)। वे अपनी घृणा में इतने अंधे थे कि सारी मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर के प्रेम को नहीं समझ पाए (देखें यशायाह 6:8-10; मत्ती 13:13-15)। यह वह रुकावट थी जो व्यवस्था के कारण थी, जैसा कि पौलुस ने कहा "अलग करने वाली दीवार" जो यहूदियों और अन्यजातियों के बीच खड़ी थी को यीशु ने गिरा दिया:

> क्योंकि वही हमारा मेल है, जिस ने दोनों को एक कर लिया: और अलग करने वाली दीवार को जो बीच में थी, ढा दिया। और अपने शरीर में बैर अर्थात वह व्यवस्था जिस की आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया, कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे। और क्रूस पर बैर को नाश करके इस के द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए। और उस ने आकर तुम्हें जो दूर थे, और उन्हें जो निकट थे, दोनों को मेल-मिलाप का सुसमाचार सुनाया। क्योंकि उस ही के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में पिता के पास पहुंच होती है (इफिसियों 2:14-18)।

इफिसियां में जिसे "भेद" कहा गया है वह "मेल" (*eirēnē,* इरेन) है जो "परमेश्वर में गुप्त" था, यानी "अर्थात यह, कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा अन्यजातीय लोग मीरास में साझी, और एक ही देह के और प्रतिज्ञा के भागी हैं" (इफिसियों 3:6, 9)। संदेश साफ़ है कि

मसीह यीशु में चमड़ी के रंग, सामाजिक पदवी या किसी अन्य भिन्नता के लिए जो बाहरी रूप की हो कोई जातीय भेदभाव या पक्षपात के लिए कोई जगह नहीं है; क्योंकि "परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता" (रोमियों 2:11; KJV)।[45] यूनानी धर्मशास्त्र में (*prosōpolēmpsia,* प्रोसोलेंप्सिया) अभिव्यक्ति "चेहरे या व्यक्ति को ग्रहण या [स्वीकार] करने वाला व्यक्ति" यानी सामाजिक स्थिति, धन तथा ऐसे और कारणों से ऐसी परिस्थितियों के आधार पर पक्षपात या तरफ़दारी दिखाते हुए बाहरी रूप के अनुसार चलने वाला व्यक्ति का संकेत देता है। जब पहले अन्यजाति विश्वासी, कुरनेलियुस के घराने के पास जाने के लिए बुलाया गया तो पतरस को समझ में आया कि जातीयता के आधार पर पक्षपात की भी मनाही थी। जब उसने उनके साथ बात करना आरम्भ किया तो उसने कहा, "अब मुझे निश्चय हुआ कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, वरन् हर जाति में जो उससे डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है" (प्रेरितों 10:34, 35)।

इसलिए यीशु के चेलों में पहला पतरस व्यक्ति था जिसके ऊपर मसीह के मेल कराने के मिशन के अभेदात्मक होने को प्रकट किया गया। स्पष्टतया उसे खुद भी पूरी समझ नहीं थी जिसकी उसने पिन्तेकुस्त के दिन घोषणा की थी: "क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा" (प्रेरितों 2:39)। यीशु ने व्यक्तिगत रूप में अन्यजातियों में इस स्वीकारे जाने के बारे में अपने चेलों से बात की थी (मत्ती 8:5-12; 28:18-20; यूहन्ना 10:16); परन्तु उन्हें बताई गई उसकी अधिकतर शिक्षा की तरह वे समझ नहीं पाए कि वह उन्हें क्या बता रहा था क्योंकि उनके दिमाग बंद थे (मत्ती 15:15, 16; मरकुस 8:15-21; लूका 18:34)।

यहूदियों के पक्ष में और अन्यजातियों के विरोध में पक्षपात पर काबू पाना आसान नहीं था, उनके लिए भी जो अगुआई करने वाले थे। परमेश्वर ने अन्यजातियों के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश का मार्ग खोलने के लिए चाहे पतरस का इस्तेमाल किया परन्तु गलातियों 2:11-14 हमें बताता है कि पतरस के लिए भी इस सच्चाई को मान पाना कितना कठिन था जो परमेश्वर ने उस पर प्रकट की थी। अन्यजाति जगत में राज्य के फैलने में बरनबास की मुख्य भूमिका थी; परन्तु दबाव में वह भी सच्चाई से पीछे हट गया था। पौलुस की डांट से बेशक इन दोनों को समझ आ गई थी और उन्होंने अन्यजाति भाइयों के साथ संगति कर ली थी।

अन्यजातियों की दुविधा (2:11-21)

पौलुस ने गलातियों की एक दुखद कहानी बताई जिसमें अन्यजातियों के मसीहियों के प्रति यहूदी मसीहियों के कपट का सामना करना पड़ा (2:11-14)। अंताकिया की कलीसिया में जाने पर पतरस कुछ देर तक अन्यजाति मसीहियों के साथ सामाजिक संगति करता रहा। परन्तु अंताकिया में "याकूब की ओर से कुछ लोगों के आने" पर पतरस ने अपने आपको अन्यजातियों से अलग कर लिया (2:12)। स्थिति का सामना करते हुए पौलुस ने पतरस को सख्ती से डांट लगाई।

यह एक तथ्य है कि यह लोग यरूशलेम से आए थे, जहां याकूब कलीसिया के प्रमुख अगुवे के रूप में माना जाता था (2:9)। परन्तु यह निष्कर्ष निकालने में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए कि केवल इसलिए कि उनके साथ याकूब का नाम जुड़ा हुआ था वह किसी प्रकार से

अंताकिया में आने वाले संकट का जिम्मेदार है। प्रेरितों और प्राचीनों की यरूशलेम की सभा में याकूब पौलुस और बरनबास का मुख्य समर्थक था। वचन का इस्तेमाल करते हुए उसने पहली यात्रा पर इनके द्वारा बहुत से अन्यजातियों को जीतने के सम्बन्ध में इन दोनों के काम का समर्थन किया और उसने सलाह भी दी कि कलीसियाओं में अन्यजातियों के साथ कैसे बर्ताव किया जाना चाहिए (प्रेरितों 15:13-21)। जब प्रेरितों और प्राचीनों ने "अन्ताकिया और सीरिया और किलिकिया" के अन्यजाति भाइयों को लिखा तो उन्होंने इन शब्दों को शामिल किया: "... हमने सुना है कि हम में से कुछ ने वहां जाकर, तुम्हें अपनी बातों से घबरा दिया; और तुम्हारे मन उलट दिए हैं परन्तु *हम ने उनको आज्ञा नहीं दी थी*" (प्रेरितों 15:23, 24)।

पौलुस की नज़र में अंताकिया में पतरस का व्यवहार निरा कपट था। आखिर पतरस ही था जिसने परमेश्वर की प्रेरणा के द्वारा परमेश्वर की प्रतिज्ञा के "दूर-दूर के लोगों के लिए" होने की बात कही थी (प्रेरितों 2:39)। और तो और परमेश्वर के सतत प्रोत्साहन के द्वारा वही पहले अन्यजातियों में सुसमाचार सुनाने के लिए कुरनेलियुस के घर के लिए गया था (प्रेरितों 10)। कुरनेलियुस और उसके घराने के बपतिस्मे के बाद यरूशलेम के यहूदी मसीहियों ने पतरस की वापसी पर तुरन्त चुनौती दे दी। उन्होंने उस पर यह कहते हुए आरोप लगाया था कि "तू ने खतना रहित लोगों के यहां जाकर उनके साथ खाया" (प्रेरितों 11:3)। जवाब में पतरस ने उन्हें यह समझाते हुए कि उसे अन्य जातियों में जाने के लिए ईश्वरीय अगुआई दी गई थी और उन्हें पवित्र आत्मा दिया गया था (बिल्कुल वैसे ही जैसे आरम्भ में प्रेरितों को मिला था) अपने कामों का बचाव किया। पतरस के तर्कों का असर हुआ, जिससे उसके विरोधियों ने यह निष्कर्ष निकाला कि "परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिये मन फिराव का दान दिया है" (प्रेरितों 11:4-18)।

पतरस यरूशलेम की कलीसिया का "खम्भा" था (गलातियों 2:9), जिस कारण उसके कामों का असर दूसरों पर हुआ। परन्तु अंताकिया वाले अवसर पर उस असर ने नकरात्मक ढंग से काम किया। पौलुस को यह लिखते हुए दुख हुआ होगा, "उसके साथ शेष यहूदियों ने भी कपट किया, यहां तक कि बरनबास भी उनके कपट में पड़ गया" (2:13)। वचन में चाहे यह कहा नहीं गया है परन्तु हम अपने प्रिय मित्र के दोगलेपन को देखकर पौलुस के चेहरे पर परेशानी की कल्पना किए बिना रह नहीं सकते।

अंताकिया में बरनबास के व्यवहार से पौलुस को जो सबसे बड़ा दुख हुआ होगा वह यह था कि उस अफ़सोसनाक दिन पर अन्यजातियों के साथ खड़े होकर उनकी स्थिति का बचाव करने वाला यदि कोई होना चाहिए था तो वह बरनबास था। पौलुस के साथ बरनबास को विशेष रूप से "उस काम के लिये अलग" किया गया था "जिसके लिए [पवित्र आत्मा] ने उन्हें बुलाया" था (प्रेरितों 13:2)। उनके काम का मुख्य उद्देश्य अन्यजाति होने थे। "याकूब और कैफा और यूहन्ना" ने पौलुस और "बरनबास को संगति का दाहिना हाथ दिया कि हम अन्यजातियों के पास जाएं, और वे खतना किए हुओं के पास" (2:9)।[46]

अंताकिया का यह संकट जो "याकूब की ओर से आए" इन लोगों के आने से पैदा हुआ था, अन्यजातियों के साथ खाने के मुद्दे के इर्द-गिर्द घूम रहा था। ये "कुछ लोग" भाई थे, जो यरूशलेम की कलीसिया के सदस्य थे यानी वे विश्वासी यहूदी थे। अविश्वासी यहूदियों के

कारण बेशक पौलुस, बरनबास और अन्यों ने अपनी मिशनरी यात्राओं के दौरान काफ़ी सताव सहा था पर अंताकिया की समस्या निरोल रूप में "मण्डलियों के बीच की" थी।

पिन्तेकुस्त के दिन के बाद कई साल तक सुसमाचार केवल यहूदियों में सुनाया जाता रहा। कुरनेलियुस के मनपरिवर्तन के बाद में, कुछ देर तक ऐसा ही चलता रहा, जैसा कि प्रेरितों 11:19 से स्पष्ट है। परन्तु स्तिफनुस की शहादत और उसके बाद होने वाले सताव के कारण चेलों के तितर बितर होने के बाद, कुछ लोग "फिरते-फिरते फीनीके और साइप्रस और अन्ताकिया में पहुंचे; परन्तु यहूदियों को छोड़ किसी और को वचन न सुनाते थे" (प्रेरितों 11:19)। यहां पर कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण बात हुई है। लूका ने लिखा है:

> परन्तु उनमें से कितने साइप्रसवासी और कुरेनी थे, जो अन्ताकिया में आकर यूनानियों को भी[47] यीशु के सुसमाचार की बातें सुनाने लगे। प्रभु का हाथ उन पर था, और बहुत लोग विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे (प्रेरितों 11:20, 21)।

इस बात से प्रारम्भिक कलीसिया में एक बहुत बड़े मोड़ का संकेत मिला और यहूदी मसीहियों पर इसका जबर्दस्त असर हुआ। लगभग डेढ़ हज़ार वर्ष तक यहूदियों को परमेश्वर के विशेष लोग होने की आशीष मिली थी (निर्गमन 19:1-8)। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि कुछ यहूदियों के लिए अन्यजातियों के लिए परमेश्वर के प्रेम को समझ पाना कठिन था! इससे भी बढ़कर कुछ यहूदी मसीहियों के लिए यह समझ पाना कठिन था कि यहूदी मत में परिवर्तित हुए बिना अन्यजातियों को केवल मसीह के द्वारा उद्धार मिल सकता है (प्रेरितों 15:1)। इसी कारण मसीह की एक देह में यहूदियों और अन्यजातियों का मिलना प्रारम्भिक कलीसिया के सामने आने वाली सबसे बड़ी समस्या थी।

टिप्पणियां

[1]पौलुस के अपनी प्रेरिताई का बचाव करते हुए पत्र के इस भाग में एक संक्षिप्त दायरे के भीतर "फिर" (*epeita*) (देखें 1:18, 21)। [2]देखें प्रेरितों 4:36, 37; 9:27; 11:22-30; 13:1—14:28; 15:2-4, 12, 22, 36-41. [3]देखें 2 कुरिन्थियों 2:13; 7:6, 7, 13-15; 8:6, 16, 17, 23; 12:18; 2 तीमुथियुस 4:10; तीतुस 1:4, 5. [4]कैरोलन ओसिएक, *गलेशियंस,* न्यू टैस्टामेंट मैसेज (विलमिंग्टन, डेलवेयर: माइकल गलेज़ियर, 1980), 19. [5]यह 2:6ख, 9 में मिलने वाले का रूप है, जबकि ऐसे ही रूप 2:2, 6क में मिलते हैं। [6]जोसेफस, *वारज़* 3.9.8; 4.3.4, 9. [7]जे. बी. लाइटफुट, *द एपिस्टल आफ सेंट पॉल टू द गलेशियंस,* क्लासिक कमैंट्री लाइब्रेरी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1957), 108; इग्नेशियस *पोलिकार्प* 3.1; प्लाटो *अपोलॉजी* 41ई; *जॉर्जियार* 472क; ज़िनोफोन *साइरोपीडिया* 7.1.41. [8]रिचर्ड एन. लॉन्गनैकर, *गलेशियंस,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 41 (नैशविल्ल: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1990), 51. [9]गेस विदरिंगटन III, *ग्रेस इन गलेशियंस: ए कमैंट्री ऑन सेंट पॉल'स लैटर टू द गलेशियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1998), 136 देखें पोलीब्युस *हिस्ट्रीस* 1.18.3; 2.7.8; प्लूटार्च *मोरेरिया* 261बी। [10]वहीं।

[11]देखें 2:4; 3:28; 4:22, 23, 26, 30, 31; 5:1 [दो बार], 13 [दो बार]। [12]कैनथ एल. बोल्स, *गलेशियंस एंड इफिसियंस,* द कॉलेज प्रैस NIV कमैंट्री (जॉप्लिन, मिजोरी: कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कं., 1993) 56. [13]ब्रूस एम. मैजगर, *ए टैक्सचुअल कमैंट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट,* द्वितीय संस्क. (स्टटगर्ट: जर्मन बाइबल सोसायटी, 1994), 522-23. देखें टरटुलियन अगेंस्ट *हेयरसिज* 5.3; 3.13.3. [14]एफ. एफ. ब्रूस, *द एपिस्टल टू द गलेशियंस, द न्यू इंटरनैशनल ग्रीक टैस्टामेंट कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 118.

[15]वहीं, 123. [16]कुछ पश्चिमी हस्तलेखों में सूची में पतरस का नाम आरम्भ में डालकर क्रम को उलटा किया गया है। (मैजगर, 523.) [17]लाइटफुट, 109. देखें *तालमुड बेराकोथ* 28बी। [18]जोसेफस *एन्टिक्टीज* 18.9.3; 20.3.2; *वार्स* 6.6.1, 4; 6.8.2; टैक्टिस हिस्ट्रीस 1.54; 2.8; डायोडोरस सिसुलस *लाइब्रेरी ऑफ हिस्ट्री* 16.43.3. [19]आर. ऐलन कोल, *ए एपिस्टल आफ पॉल टू द गलेशियंस,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1965), 69. [20]बाद के एक यहूदी-मसीही सम्प्रदाय इबोनियु के नाम का अर्थ "निर्धन।" (ब्रूस. 126.)

[21]यूनानी शब्द *chrēmitzō* का अर्थ सम्भवतया यह है कि उन्हें इस नाम से "ईश्वरीय रूप में बुलाया जाता" था। "मसीही" परमेश्वर द्वारा चुना गया नाम था। [22]अंताकिया के नक्शे के लिए जिसमें नगर के बीच में से जाते हुए परिंतुस नदी का कुछ भाग एक टापू बन जाता है, *द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया,* संशो. संस्क., संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1979), 1:143 में देखें गलैनविल्ले डाउनी, "एंटिआउक" (सीरियन)। [23]वहीं, 1:142. [24]कोल, 73. [25]कई घटनाओं में जोसेफस ने इसका इस्तेमाल "दोषी ठहरते" के अर्थ में किया। (जोसेफस *वार्स* 1.32.3; 2.8.6; 7.5.6; 7.8.6.) [26]विदरिंग्टन, 154. देखें पोलीब्युस *हिस्ट्रीस* 1.16.10; 6.40.14; 7.17.1; प्लूटार्च *डेमेट्रियुस* 47.4. [27]रॉबर्ट एल. जॉनसन, *द लैटर आफ पॉल टू द गलेशियंस,* द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1969), 63. [28]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* तीसरा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, 2000), 976. देखें पोलीब्युस *हिस्ट्रीस* 3.52.6; *प्लूटार्च केउस मैरियुस* 14.8; जोसेफस *वार्स* 1.29.1; 5.7.4. [29]लियोन मौरिस, *गलेशियंस: पॉलस चार्टर ऑफ क्रिश्चियन फ्रीडम* (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1996), 81. [30]कोल, 77.

[31]देखें जोसेफस *वार्स* 2.17.10; इंगनेशियस *मैग्नेशियंस* 10.3. [32]पौलुस ने इन बातों की चर्चा पूरे विस्तार में रोमियों 1—3 में की। [33]लॉन्गनेकर, 90. [34]ब्रूस, 142. [35]जॉनसन, 72. [36]1 कुरिन्थियों 15:31 में पौलुस ने लिखा, "मैं प्रतिदिन मरता हूं।" परन्तु उस संदर्भ में उस वाक्य में केवल पाप के लिए मरने से बढ़कर बात है; इसमें मसीह के प्रेरित के रूप में पौलुस द्वारा कहे जाने वाले असंख्य खतरे आ जाते हैं (देखें 2 कुरिन्थियों 1:8-10; 11:23-28)। [37]विदरिंग्टन, 192. [38]बाउर, 490. [39]NASB में प्रेरितों 15:2 में विषय के रूप में "भाइयो" जोड़ा गया है। [40]बरनबास की विश्वसनीयता का एक और उदाहरण प्रेरितों 11:27-30 में मिलता है। उस वचन में अंताकिया के भाइयों ने शाऊल के लिए जिन्हें वे अकाल राहत के लिए यरूशलेम के प्राचीनों के पास भेज रहे थे, शाऊल के साथ उसे चुना।

[41]देखें रोमियों 14:10, 11; 1 पतरस 4:17, 18; प्रकाशितवाक्य 20:11-15; 22:12. [42]यह किसी भी प्रकार से यूहन्ना 5:24 में यीशु के शब्दों की गम्भीरता को किसी प्रकार से कम नहीं करता: "मैं तुमसे सच सच कहता हूं, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।" इस वचन में "दण्ड" शब्द *krisis* है जिसके "न्याय" या "दोष" सहित कई अर्थ हैं। हमें पवित्र शास्त्र की व्याख्या (या अनुवाद) कभी भी इस प्रकार से नहीं करना चाहिए जिससे लगे कि एक वचन दूसरे के विपरीत है। जैसा कि कहा गया है "अंत के दिन" (न्याय) में सब प्रभु के सामने खड़े होंगे; परन्तु विश्वासी को चाहे न्याय की इस प्रक्रिया में शामिल किया जाएगा, पर दोषी नहीं ठहराया जाएगा, क्योंकि विश्वास के द्वारा वह पहले ही मृत्यु में से जीवन में प्रवेश कर चुका होगा (यूहन्ना 3:16-19, 36)। [43]प्रकाशितवाक्य 12:17 में शब्दों का अर्थ "यीशु द्वारा दी गई गवाही" हो सकता है (जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स, *द रेवलेशन टू जॉन* (*द अपोकलिप्स*), द लिविंग वर्ड कमैंट्री [आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1974], 106)। [44]उदाहरण के लिए 1 कुरिन्थियों 15:51 और इफिसियों 5:32 में दो और भेदों का वर्णन किया गया है। [45]देखें व्यवस्थाविवरण 1:17; 2 इतिहास 19:7; इफिसियों 6:9; कुलुस्सियों 3:25; याकूब 2:1, 9. [46]पौलुस ने प्रेरित के रूप में अपने पद को किसी भी प्रकार से पतरस या अन्यों से जो उससे पहले प्रभु में आए थे कम नहीं देखा (2:6-9)। 2 कुरिन्थियों 11:5 में उसने और ज़ोर देकर कहा: "मैं तो समझता हूं, कि मैं किसी बात में बड़े से बड़े प्रेरित से कम नहीं हूं" (या "सुपर-प्रेरितों"; NIV)। [47]"यूनानियों" (*Hellēn*) मूल में उन लोगों के लिए है जो यूनानी रस्मो रिवाज के साथ जीवन बिताते थे।